Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ○

(सूरतुल बक़रा आयत :173)

अनुवाद: हे लोगो ! जो ईमान लाए हो जो रिज़्क हम ने तुम्हें दिया है उस में से पवित्र चीज़ें खाओ अल्लाह का शुक्र करो और उन में से खाओ।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 3

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 18

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

16 शअबान 1439 हिजरी कमरी 3 हिजरत 1397 हिजरी शमसी 3 मई 2018 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़ज़ल नाज़िल करे। आमीन

ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित कर के कहा है कि तू और जो तेरे घर की चारदीवारी के अन्दर होगा और जो पूर्ण अनुकरण और इताअत और सच्चे तक्वा से तुझ में फना हो जाएगा वे सब प्लेग से बचाए जांएगे।

अन्तत: लोग आश्चर्य चकित हो कर कहेंगे कि अपेक्षाकृत ख़ुदा का पक्ष इस क़ौम के साथ है और उसने अपनी विशेष कृपा से उन लोगों को ऐसा सुरक्षित रखा है जिसका उदाहरण नहीं मिलता ।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

لَنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ

(अत्तौबह 51)

अनुवाद: हमें कोई मुसीबत उस मुसीबत के अतिरिक्त हरगिज़ नहीं पहुंच सकती जो अल्लाह ने हमारे लिए निश्चित कर दी है । वही हमारा स्वामी है और ईमान लाने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए ।

यह बात धन्यवाद योग्य है कि अंग्रेज़ी सरकार ने अपनी प्रजा पर दया करके दोबारा प्लेग से बचाने के लिए टीके का प्रस्ताव रखा और ख़ुदा के बंदों की भलाई के लिए लाखों का बोझ अपने सर ले लिया । वास्तव में यह वह कार्य है जिसका धन्यवाद करते हुए स्वागत करना समझदार प्रजा का कर्तव्य है । वह मनुष्य मूर्ख और स्वयं का शत्रु है जो टीके के सन्दर्भ में अनुचित धारणा रखे, क्योंकि यह बारम्बार अनुभव हो चुका है कि यह सरकार किसी ख़तरनाक इलाज पर अमल कराना नहीं चाहती अपितु अनेकों अनुभवों से गुज़रने के पश्चात ऐसे मामलों में जो प्रयास वास्तव में लाभकारी सिद्ध होते हैं उन्हीं को प्रस्तुत करती है। अत: यह बात इन्सानियत से परे है कि सच्ची भलाई हेतु सरकार लाखों रूपये व्यय करती है और कर चुकी है, उसके सम्बन्ध में यह कहा जाए कि सरकार के इस कष्ट उठाने और धन व्यय करने के पीछे अपना कोई निजी स्वार्थ है। वह प्रजा दुर्भाग्यशाली है जो अनुचित धारणों में इस सीमा तक पहुंच जाए। निस्सन्देह इस समय तक जो प्रयास इस दुनियां में इस सरकार के हाथ लगे उनमें से सवोत्तम प्रयास यह है कि टीका लगवाया जाए। इसे किसी भी प्रकार नकारा नहीं जा सकता कि यह प्रयास लाभकारी सिद्ध हुआ है। भौतिक साधनों से लाभान्वित होते हुए समस्त प्रजा का कर्तव्य है कि इस पर अमल करते हुए सरकार के उस दु:ख को दूर करे जो उसे उनके प्राणों के लिए है। परन्तु हम बड़े आदर और सम्मान के साथ इस कृपालु सरकार की सेवा में निवेदन करते हैं कि यदि हमारे लिए एक आसमानी रोक न होती तो प्रजा में सर्व प्रथम यह टीका हम लगवाते। आसमानी रोक यह है कि ख़ुदा की इच्छा है कि इस युग में मनुष्यों के लिए एक आसमानी रहमत का निशान दिखाए। अत: उसने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा कि तू और जो मनुष्य तेरे घर की चार दीवारी के अन्दर होगा और वह जो पूरी श्रद्धा, निष्ठा और ख़ुदा पर पूर्ण आस्था रखते हुए तुझ पर विश्वास करेगा, ऐसे सभी लोग प्लेग से सुरक्षित रखे जाएंगे इन अन्तिम दिनों में ख़ुदा का यह चमत्कार होगा ताकि वह क़ौमों में अन्तर करके दिखाए। परन्तु वह जो पूरी श्रद्धा और निष्ठा से आदेश का पालन नहीं करता उसका तुझसे कोई नाता नहीं है । इसलिए खेद मत कर। यह अल्लाह का आदेश है जिसके कारण हमें अपने और उन समस्त लोगों के प्राणों के लिए जो हमारे घर की चार दीवारी में रहते हैं टीके की कोई आवश्यकता नहीं, क्योंकि जैसा मैं अभी वर्णन कर चुका हूँ कि आज से बहुत पहले उस ख़ुदा ने जो धरती और आकाश का ख़ुदा है, जिसके ज्ञान और अधिकार से कोई वस्तु बाहर नहीं, मुझे (ईशवाणी) वही द्वारा बताया है कि मैं हर ऐसे मनुष्य को प्लेग की मौत से सुरक्षित रखूँगा जो इस घर की चार दीवारी में होगा बशर्ते कि वह अपने समस्त विरोधी इरादों को सर्वथा त्याग कर पूरी श्रद्धा और शालीनता से बैअत कर ले और ख़ुदा के आदेश और उसके भेजे हुए के समक्ष किसी भी प्रकार से उद्दण्ड, अभिमानी, अहंकारी और स्वयं को श्रेष्ठ समझने वाला न हो और ख़ुदा की शिक्षानुसार आचरण करता हो। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करते हुए यह भी बताया कि आमतौर पर कादियान में भयानक प्लेग नहीं आएगी जिससे लोग कुत्तों की भांति मरें और दुख व भय के कारण पागल हो जाएं। सामान्यत: वे समस्त लोग जो इस जमाअत के हों चाहे कितने ही हों विरोधियों की अपेक्षा प्लेग से सुरक्षित रहेंगे, परन्तु उनमें से ऐसे लोग जो अपनी प्रतिज्ञा पर पूरी तरह कायम नहीं या उनके विषय में कोई अन्य गुप्त कारण हो जो ख़ुदा के ज्ञान में हो, वे प्लेग का शिकार हो सकते हैं। परन्तु अन्तत: लोग आश्चर्य चकित हो कर कहेंगे कि अपेक्षाकृत ख़ुदा का पक्ष इस क़ौम के साथ है और उसने अपनी विशेष कृपा से उन लोगों को ऐसा सुरक्षित रखा है जिसका उदाहरण नहीं मिलता। इस बात पर कुछ मूर्ख लोग भौंचक्के रह जाएंगे, कुछ हंसेंगे कुछ मुझे दीवाना कहेंगे और कुछ आश्चर्य करेंगे कि क्या ऐसा ख़ुदा विद्यमान है जो किसी भौतिक साधन के बिना अपनी दया की वर्षा कर सकता है। इसका उत्तर यही है कि हां निसन्देह ऐसा सर्वशक्तिमान ख़ुदा विद्यमान है। यदि वह ऐसा न होता तो उससे सम्बन्ध रखने वाले जीवित ही मर जाते । वह अलौकिक शक्तियों से भरपूर है और उसकी पवित्र शक्तियां अदभुत हैं। एक ओर मूर्ख विरोधियों को अपने भक्तों पर कुत्तों की भांति डाल देता है दूसरी ओर फ़रिश्तों को आदेश देता है कि उनकी सहायता करें । ऐसा ही जब संसार पर प्रकोप आता है और अत्याचारियों पर कहर ढाता है तो उसके नेत्र उसके विशेष व्यक्तियों की रक्षा करते हैं। यदि ऐसा न होता तो सत्य के उपासकों के कार्य कलाप नष्ट हो जाते, उनको कोई न पहचान पाता। उसकी शक्तियां असीमित हैं परन्तु विश्वास के अनुसार ही लोगों पर दृष्टिगोचर होती हैं। ख़ुदा जो चाहता है करता है परन्तु अपनी अलौकिक और असाधारण शक्तियों को दिखाने का इरादा उन्हीं के लिए करता है जो उसके लिए अपनी आदतों में असाधारण परिवर्तन कर लेते हैं। इस युग में ऐसे लोग बहुत ही कम हैं जो उसे जानते

शेष पृष्ठ 6 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

जलसा सालाना ब्रिटेन 2017 ई के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ की व्यस्तता (भाग -3)

☆ इमाम जमाअत अहमदिया वर्तमान युग के महान धार्मिक नेता हैं जमाअत अहमदिया के ख़लीफा बहुत नरम दिल, विनम्र और पवित्र आदमी हैं।

मेरा अहमदी दोस्तों के साथ संपर्क हुआ तो मैंने पहली बार इस्लामी दुआएं पढ़ी हैं, इस्लाम का आधार प्रेम और शांति है, मुझे ख़ुशी है कि हमारा संबंध अहमदियों से बन गया है, हम ने अहमदियों में केवल प्यार और स्नेह ही देखा है, जिस तरह यहाँ हमारा ध्यान रखा गया है हम बता नहीं सकते, अब हम अमेरिका जाएंगे और लोगों को ख़िलाफत अहमदिया के बारे में बताएंगे, हमें लगता है कि हम में से कुछ अहमदी मुसलमान हो जाएंगे हुज़ूर बिल्कुल सीधी और साफ बात करते हैं और बड़े मानवीय और दयालु हैं, हमारी इच्छा है कि हुज़ूर अनवर अमेरिका आएं और वहां आकर हमारा मार्गदर्शन करें और बौद्ध लोगों से मिलें, इमाम जमाअत अहमदिया वर्तमान युग के महान धार्मिक नेता हैं।

(बौद्ध संगठन CSS के फाउंडर और अध्यक्ष)

मैं जमाअत अहमदिया के आतिथ्य से बहुत प्रभावित हूँ, मानव अधिकारों के लिए जमाअत अहमदिया द्वारा की गई कोशिशों, विशेषकर उन जगहों पर जहां प्राकृतिक आपदाएं आई हैं सराहनीय हैं, इसी तरह जमाअत अहमदिया की शैक्षिक क्षेत्र में सेवाएं सराहनीय हैं।

(नाओको नाकाजी साहिब, प्रतिनिधिमंडल की एक सदस्य)

जिस प्रकार स्वयंसेवकों ने हमारी सेवा की और हमारी सभी जरूरतों का ध्यान रखा वह बहुत ही उच्च और प्रभावी था। सबसे बढ़ कर इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मुलाकात थी, मैं आज तक जितने भी समुदाय के नेताओं के साथ मिला हूं, उन में से इमाम जमाअत अहमदिया सबसे अधिक बुद्धिमान और सौम्य हैं।

(प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य Minh Tam Nelson साहिब)

मैं इमाम जमाअत अहमदिया का भी विशेष तौर पर धन्यवाद अदा करना चाहता हूं जिन्होंने अपने बहुत कीमती समय में से हमारे लिए समय निकाला, इसमें कोई संदेह नहीं कि जमाअत अहमदिया के ख़लीफा बहुत नरम दिल, विनम्र और पवित्र मानव हैं।

(प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य Wen Wah Chew साहिब)

जलसा में शामिल होने वाले अमरीका के बौद्ध समुदाय के सम्मान्नीय मेहमानों के ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

केवल जमैका के लिए नहीं बल्कि हमारी योजना तो पूरी दुनिया के लिए है कि इस्लाम का असली संदेश और इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा सारी दुनिया में फैलाएं और यही हमारा मिशन है।

मेहमानों से मुलाकात के दौरान हुज़ूर अनवर के भव्य विचार

जलसा में सम्मिलित होने वाले सम्मानित सदस्यों के ईमान वर्धक विचार

दुनिया के विभिन्न देशों से जलसा में शामिल होने वाले प्रतिनिधियों की हज़रत अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेरेहिल अज़ीज़ से मुलाकातें।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

* श्राउड (Shroud) के एक विशेषज्ञ Olaf Jostein Andreassen संबंध नॉर्वे से है और कई पुस्तकों के लेखक हैं उन्हें इंटरनेट के माध्यम से श्राउड (Shroud) की प्रदर्शनी के बारे में पता चला, इसलिए उन्होंने किसी को बिना बताए इस प्रदर्शनी में शामिल होने के लिए अपनी टिकट बुक करा ली और फिर नार्वे का जमाअत से संपर्क किया और कहा कि मैं ब्रिटेन में जल्सा में शामिल होने जा रहा हूं।

उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा,मेरे साथ राजाओं की तह बर्ताव किया गया और मैंने ऐसा दृश्य देखा है जिसे शब्दों में वर्णित नहीं किया जा सकता है।

इस प्रदर्शनी में शामिल होने वाले कुछ मेहमान ईसाई थे। चूंकि ये लोग रविवार को चर्च जाते हैं, इसलिए उनके चर्च जाने की व्यवस्था की जाती थी। जब आप से पूछा गया कि क्या आप भी चर्च जाना चाहते हैं"? तो वह बहुत प्रभावित हुए और कहा, मुझे विश्वास नहीं है कि एक मुस्लिम समुदाय चर्च में ले जाने के बारे में पूछ रहा है। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की मुहब्बत और सम्मान को देखते हुए, उन्होंने इस दिन इरादा किया कि वह चर्च नहीं जाएंगे, बल्कि अपना सारा समय जलसा में ही व्यतीत करेंगे।

* शराउड (Shroud) के एक और विशेषज्ञ Burno Barberis (ब्रनो बारबीरीज़) साहिब जो ट्यूरिन के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक समिति के सदर भी हैं उन्होंने अपने भाव को प्रकट करते हुए कहा: मैं इस बात से बहुत प्रभावित हुआ हूं कि अहमदियों का ख़िलाफत के साथ एक मजबूत रिश्ता है। अहमदी जहाँ कहीं भी हैं ख़िलाफत से जुड़े हैं और चाहे आपस में एक-दूसरे को न भी जानते हों उनका आपस में एक मजबूत संबंध है। यह एक बहुत खास और अछूती बात है।

* इस साल एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर Peter Sanders जिसने मक्का और मदीना की विशेष तस्वीरें ली हैं वह भी जलसा में शामिल हुआ। रियूए आफ रिलेजनज़ की प्रदर्शनी को देख कर कहने लगा जमाअत अहमदिया विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच एक सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश कर रही है। इस्लाम अपनी वास्तविक रूप जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए थे बिगड़ गया है। इस तरह की प्रदर्शनी इस्लाम के शांति के संदेश के प्रसार के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

* ब्रिटिश सोसाइटी आफ श्राऊड के संपादक डेविड रॉल्फ पिछले 40 सालों से कफ़ने मसीह की जांच कर रहे हैं। उन्होंने श्राऊड के संदर्भ के रूप में पहली वृत्त तस्वीर बनाई थी जिस पर उन्हें पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है। उन्होंने कहा: लोग ट्यूरिन कफन को भुला बैठे हैं। अधिकांश लोग इसे कृत्रिम कहते हैं। मैं कुछ चर्चों को इस बात पर सहमत होने के लिए वर्षों लग गए कि वहां श्राऊड के बारे में तकरीर करूं। परन्तु जमाअत अहमदिया श्राऊड का वर्णन करने वालों पर अग्रणी है। मुझे श्राऊड पर अनुसंधान में चालीस साल बीत गए परन्तु जब मैं जलसा पर कफन के प्रदर्शन को देखने के लिए आया हूं तो मुझे कफन का वास्तविक उद्देश्य पता चला जो कि संसार के विभिन्न धर्मों के लोगों को एक छाया में लाना था और यह एक ऐसा उद्देश्य है जो न कवल जमाअत अहमदिया में केवल पाया गया है, बल्कि इस

शेष पृष्ठ 7 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह के साथ आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत भरे सुलूक की ईमान वर्धक घटनाओं का वर्णन।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ से इन के बाग़ के फल में बहुत अधिक बरकत और कर्ज़ के अदा करने के लिए विशेष नसीहत।

आदरणीय बिलाल अदलबी साहिब आफ सीरिया और आदरणीया सलीमा मीर साहिब भूतपूर्व सदर लजना इमाउल्लाह कराची की वफात, मरहूमीन का ज़िके ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 30 मार्च 2018 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन लंदन, यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह थे और यह हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम के पुत्र थे। अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम वही सहाबी हैं जिनके उल्लेख के बारे में कुछ जुम्अः पहले मैंने बताया था कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी शहादत के बाद फरमाया कि अल्लाह तआला ने उनसे पूछा था कि तुम्हारी क्या इच्छा है? मुझे बताओ मैं यह पूरी करूँगा तो उन्होंने कहा कि हे अल्लाह मेरी इच्छा है कि पुनर्जीवित करके दुनिया में भेजा जाऊँ और फिर तेरी राह में शहीद हो जाऊँ। क्योंकि यह अल्लाह तआला की सुन्नत के ख़िलाफ है इसलिए अल्लाह तआला ने फरमाया यह तो नहीं हो सकता क्योंकि मरने वाले फिर दुनिया में नहीं लौटाए जाते। (सुनन अत्तिरमज़ी अध्यायों तफसीरुल क़ुरआन सूरः आले इमरान हदीस 3010)। इस कि अतिरिक्त बताओ क्या बात है तो बहरहाल इससे उनकी कुरबानी की गुणवत्ता और अल्लाह तआला का उनके साथ असामान्य व्यवहार का पता चलता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अपने महान सहाबी पिता के पुत्र थे और बचपन में ही बैअत उक़बा सानिया के दौरान उन्होंने बैअत की थी।

(असदुल ग़ाबह जिल्द पृष्ठ मुख्य 492 जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन हराम मुद्रित दारुल इलिमया बैरूत 1996 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन हराम की घटना में यह भी उल्लेख किया था कि उन्होंने अपने बेटे को कहा था कि यहूदी से लिया हुआ मेरा जो कर्ज़ है मेरी शहादत के बाद बगीचे से फल बेचकर अदा कर देना।

(सहीह अल्बुख़ारी किताब अलजनाईज़ हदीस 1351) (उमदतुल-कारी व्याख्या सहीह अल्बुख़ारी जिल्द 8 पृष्ठ 244 हदीस 1351 मुद्रित दारुल अहया अत्तुरास अल-अरबी बैरूत 2003 ई)

रिवायत के अनुसार उन्होंने वह कर्ज़ अदा किया इसके अलावा भी उस युग में रिवाज था कि बागों और फसलों के बदला में कर्ज़ लिया जाता था। हज़रत जाबिर भी अपने खर्चों को पूरा करने के लिए कर्ज लेते थे। इसकी एक विस्तृत घटना का उल्लेख मिलता है कि कैसे आप ने कर्ज चुकाने के समय यहूदी से कहा कि उद्यान में आय कम हुई है या संभावना है कि फल थोड़ा है आय कम होगी इसलिए कर्ज़ वसूली में सुविधा दे दो। कुछ हिस्सा ले लो, अगले साल कुछ ले लो। लेकिन वे यहूदी किसी प्रकार की सुविधा देने के लिए तैयार नहीं हुआ और फिर परेशानी में जाबिर बिन अब्दुल्लाह आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए अथवा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बारे में पता चला। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदी से सिफारिश की लेकिन वह नहीं माना। फिर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कैसे अपने इस सहाबी से कर्ज उतारने के सिलसिले में अनुकंपा फ़रमाई। दुआ की और अल्लाह तआला ने उस में कैसे फज़ल फरमाया। इसका उल्लेख रिवायतों में आता है। यहां यह भी बता दूं कि कुछ कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र यानी हज़रत जाबिर पिता जो थे उनके कर्ज़ अदा करने के सिलसिले में यह घटना बताते हैं कि उन्होंने अपने बेटे को कर्ज उतारने के सिलसिले में नसीहत फ़रमाई थी। बहरहाल उस समय फल कम लगा था और इस कर्ज का अदा करना मुश्किल था। फिर जैसा कि मैंने बताया, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक मामला पहुंचा लेकिन बुख़ारी में जो रिवायत मिलती है उससे लगता है कि यह बाद में किसी समय की घटना है। बहरहाल जो भी हो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने सहाबा से प्रेम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ का चमत्कार जिस प्रकार भी यह वर्णन किया जाए इससे प्रकट होता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते हैं कि मदीना में एक यहूदी था जो मेरे खजूरों के बाड़ का नया फल तैयार होने तक मुझे कर्ज़ दिया करता था। मेरी यह भूमि रोमा नामक कुएं वाली सड़क पर स्थित थी। एक बार साल बीत गया लेकिन फल कम लगा और पूरी तरह तैयार भी नहीं हुआ। फल के पकने के मौसम में वह यहूदी आदत के अनुसार अपना कर्ज़ लेने आ गया जबकि उस साल मैंने कोई फल नहीं तोड़ा था। कहते हैं कि मैंने उससे और अधिक एक साल की मोहलत मांगी लेकिन उसने मना कर दिया। उसकी नीयत थी कि इस तरह शायद यह पूरे का पूरा बाग़ मेरे अधिकार में आ जाए। तो इस घटना की खबर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुई तो आप ने सहाबा से कहा कि चलो हम यहूदी से जाबिर के लिए मोहलत मांगते हैं। यह कहते हैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुछ सहाबा के साथ मेरे बगीचे में तशरीफ़ लाए और यहूदी से बात की। लेकिन यहूदी ने कहा। हे अबुल कासिम! मैं इसे राहत नहीं दूंगा आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को संबोधित किया। यहूदी का यह रवैया देखकर आप ने खजूर के पेड़ों में एक चक्कर लगाया फिर आकर यहूदी से बात की। लेकिन उस ने फिर से इनकार कर दिया। कहते हैं इस दौरान मैं उद्यान से कुछ खजूर तोड़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में पेश कीं जो आप ने खाईं। फिर फरमाया जाबिर यहाँ तुम्हारा जो बागों में छप्पर सा होता है आराम करने की जगह होती है वह कहाँ है? मैंने बताया तो आपने फ़रमाया कि मेरे लिए वहाँ चटाई बिछा दो ताकि मैं कुछ देर आराम करूं। जाबिर कहते हैं मैंने आदेश का पालन किया। आप वहाँ सो गए। जब जागे तो फिर मुट्ठी भर खजूरें खाईं। आप ने उन में से कुछ खाईं फिर खड़े हुए और यहूदी से फिर बात की लेकिन वह नहीं माना। आप ने फिर से उद्यान का चक्कर लगाया और मुझसे कहा जाबिर खजूरों के फलों को तोड़ना शुरू करो और यहूदी का कर्ज़ अदा करो। मैंने फल तोड़ना शुरू किया इस बीच आप खजूर के पेड़ों में खड़े रहे। कहते हैं मैंने फल तोड़कर यहूदी का सारा कर्ज़ अदा कर दिया और कुछ खुजूर बच गईं। मैंने हुज़ूर की सेवा में यह सुसमाचार निवेदन किया तो आपने फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मैं अल्लाह तआला का रसूल हूँ।

(सहीह अल्बुख़ारी हदीस 5443)

यह जो चमत्कार हुआ है। यह जो असामान्य घटना हुई है इसलिए हुई कि अल्लाह तआला मेरी दुआएं सुनता है और मेरे कामों में बरकत डालता है। अत: जहां इसमें आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की करूणा और दुआ की स्वीकृति की वजह से फल में बरकत हम घटना देखते हैं वहाँ कर्ज़ के अदा करने के लिए सहाबा की व्याकुलता भी नज़र आती है इसलिए यह भावना है जो एक सच्चे मोमिन की भावना होनी चाहिए। कभी-कभी हम यहां अपने समाज में देखते हैं कि अहमदी

कहला कर फिर इसके बारे में चिंता नहीं करते हैं और कर्ज़ उतारने के मामले में टाल मटोल के साथ काम करते है। सालों गुज़र जाते हैं मुकदमे चल रहे होते हैं इसलिए हमें भी हमेशा याद रखना चाहिए और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इन शब्दों को याद रखना कि मेरी बैअत में आने के बाद सहाबा के नमूनों को अपने ऊपर लागू करो। वे अपनाएं तभी सुन्दर माहौल बन सकता है। जो महदी और मसीह के आाने के बाद गठन किया जा सकता था। (उद्धिरत जिल्द 7 पृष्ठ 413)

कर्ज़ के अदा करने के महत्त्व के बारे में भी हज़रत जाबिर से एक रिवायत वर्णन की जाती है लेकिन इससे पहले एक घटना बयान कर दूं कि कुछ रिवायत में आता है कि जब यह पता लगा कि कर्ज़ अदा हो गया है। हज़रत उमर भी वहां आए थे। हज़रत उमर से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इस से पूछ कि क्या घटना है तो आपने कहा, मुझे पूछने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि जब आपने बाग़ का एक चक्कर काटा तो मुझे पूरा विश्वास था कि पूरा कर्ज़ अदा हो जाएगा और जब दूसरा चक्कर लगाया तो और अधिक दृढ़ विश्वास था।

(हदीस अल बुखारी, 23 9 6)

जैसा कि मैंने कहा इस कर्ज़ के अदा करने के महत्त्व के बारे में हजरत जाबिर से एक रिवायत वर्णन की जाती है के एक सहाबी पर दो दीनार का कर्ज़ था और उस की वफात हो गई। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद उस का जनाज़ा पढ़ने से मना कर दिया इस पर एक दूसरे सहाबी ने गारंटी दी कि मैं ज़िम्मेदारी लेता हूं, कर्ज़ उतारने की तो इस बात पर फिर आप ने जनाज़ा पढ़ाया। और अगले दिन फिर उस ज़िम्मे वाले व्यक्ति से पूछा कि जो दो दीनारों की तुम ने ज़िम्मेदारी ली थी वे अदा भी कर दिए हैं या नहीं।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल जिल्द 5 पृष्ठ 104-105 हदीस 14590 मस्नद जाबिर बिन अब्दुल्लाह मुद्रित आलेमुल कुतब बैरूत 1998 ई)

अत: यह महत्व है कर्ज़ के अदा करने का और यह चिंता होनी चाहिए। लेकिन यह भी हज़रत जाबिर से यह रिवायत मिलती है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, यदि एक मोमिन संपत्ति छोड़ देता है, तो यह उस के अपने परिवार को प्राप्त होती है जो संपत्ति छोड़ देगा और अगर कर्ज़ छोड़ जाए और संपत्ति भी हो और छोड़ी गई सम्पत्ति में इतनी व्यवस्था न हो कि पूरा कर्ज़ उतर सके या बेसहारा औलाद छोड़ जाए तो उस की बेसहारा औलाद और कर्ज़ की अदायगी का प्रबन्ध किया जाए। (सहीह मुस्लिम हदीस 2005) अर्थात हुकूमत यह करेगी। ज़िम्मदार लोग यह करेंगे। यतीम की परविरश और इस के खर्चों का प्रबन्ध करना इस का बहुत अधिक महत्त्व इस्लाम में वर्णन किया गया है इस कारण से आप ने यह फरमाया कि हुकूमत की ज़िम्मेदारी है। ये दो विभिन्न रिवायतें हैं। एक तरफ तो आपने दो दिनार कर्ज़ वाले की जनाज़ा पढ़ने से इनकार कर दिया, दूसरी तरफ आपने फरमाया कि यह सरकार की ज़िम्मेदारी है। यह दो अलग-अलग मौके लगते हैं। सबसे पहले तो बिना कारण के कर्ज़ लेने वालों को यह समझाने के लिए कि कर्ज़ का बहुत अधिक महत्त्व है और इसके करीबियों को इस दायित्व को अदा करना चाहिए और दूसरे अवसर पर, इस्लामी सरकार की जिम्मेदारी बताई गई कि अनाथ बच्चों की परविरश और मरने वाले की संपत्ति कर्ज़ चुकाने के लिए काफी न हो सके तो इस की अदायगी करनी चाहिए। अत: यह है इस्लामी हुकूमतों के लिए जो आदर्श आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें दिया कि किस प्रकार इस्लामी हुकूमत को अपनी प्रजा का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से सब से अधिक प्रजा के अधिकार जो मारे जा रहे हैं वे इस्लामी सरकारों में हैं।

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हज़रत जाबिर पर करुणा की एक और घटना भी मिलती है। बयान करने वाले कहते है कि मैं जबिर इब्न अब्दुल्लाह अंसारी के पास गया और उनसे कहा कि आपने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जो बात सुनी है वह वर्णन करें। हज़रत जाबिर ने कहा कि मैं एक सफर में आप के साथ था। रवी कहते हैं कि मुझे नहीं पता था कि सफर युद्ध के लिए था या उमरह के लिए थी। बहरहाल जब हम मदीना की तरफ लौटे हैं, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, जो भी अपने परिवार वालों के पास जल्दी जाना चाहता है, वह जल्दी चला जाए। जाबिर ने कहा कि यह सुनकर हम जल्दी जल्दी चले और मैं अपने ऊंट पर सवारी कर रहा था, जिसका रंग ख़ाकी था। कोई दाग़ नहीं था। लोग मेरे पीछे थे। मैं इस तरह जा रहा था कि ऊंट मानो अड़ गया। चलने से इनकार किया। मेरे चलाने से इंकार कर दिया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखा तो मुझे कहा कि जाबिर ज़रा मज़बूती से ऊपर बैठो और यह कहकर आप ने उसे अपने कोड़े से एक बार मारा तो ऊंट अपनी जगह से कूद कर चल पड़ा और इसके बाद बड़ी तेज़ी से चलना शुरू किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, क्या तुम इस ऊंट को बेचते हो? मैंने कहा हाँ जब हम मदीना पहुँचे तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने कई सहाबियों के साथ मस्जिद में प्रवेश किया तो मैं भी आपके साथ गया और उस ऊंट को मस्जिद के सामने पत्थर के फर्श के एक कोने में बांध दिया। मैंने आपको बताया कि यह आपका ऊंट है। आप निकले और उस ऊंट के चारों ओर चक्करा काटा। फरमाया यह ऊंट हमारा ऊंट है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कई औकिए (एक करंसी का नाम है) सोना भेजा और कहा, इसे जाबिर को दे दो। फिर आपने फरमाया, क्या तुम ने पूरी रकम ले ली है? मैंने कहा हाँ आपने फरमाया यह क़ीमत और यह ऊंट तुम्हारा है। (सहीह अल्बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 2861) आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने करूणा करते हुए उस उंट को वापस कर दिया और क़ीमत भी वापस कर दी।

यह भी संभव है कि यह एक रिवायत भी है कि इस ऊंट को पानी लाने के लिए प्रयोग किया जाता था और हज़रत जाबिर के मामू और रिश्तेदार भी इसे इस्तेमाल किया करते थे। उन्होंने विरोध भी किया कि तुम ने इसे क्यों बेचा है? हम अब पानी कैसे लाएंगे? (सहीह अल्बुख़ारी किताब जिहाद हदीस 2967) तो बहरहाल यह दया थी जो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने सहाबा का और उन सहाबा को जिन्होंने विशेष क़ुर्बानियां दी हैं उनके बच्चों के साथ यह किया करते थे।

अल्लाह तआला इन सहाबा के स्तर उंचा करे और यह विभिन्न घटनाएं जो मैं वर्णन करता हूं हमें भी तौफीक दे कि हम इन नेकियों के अपने ऊपर लागू करें।

इस संक्षिप्त ख़ुत्बा के बाद अब मैं दो श्रद्धापूर्ण व्यक्तियों का उल्लेख करूंगा। पहले हैं आदरणीय बिलाल अदलबी साहिब सीरिया पिछले दिनों कार दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल हुए और 17 मार्च 2018 ई को रात डेढ़ बजे दिल की हरकत बंद होने की वजह से वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। बिलाल साहिब 1978 ई में पैदा हुए। जब मरहूम की उम्र 17 साल की थी तो उनके अहमदी भाई ने उन्हें डॉक्टर मुस्लिम अद्दरौबी साहिब की कंपनी में नौकरी दिलवाई जहां उन्हें जमाअत और अहमदियों से परिचय मिला। कुछ ही समय बाद उन्होंने बैअत कर ली। डाक्टर साहिब का कहना है कि 2010 ई से हम सीरिया में विभिन्न अहमदियों के घरों में नमाज़े अदा करते आ रहे हैं। जब हम इस साल कदियान से लौटे, तो मैंने उस ग्रुप के साथ नमाज़ पढ़ना शुरू कर दिया, जो बिलाल साहिब के घर में नमाज़ पढ़ता था। इस बात पर कि उन्होंने मेरे कारण से बैअत की थी, उन्होंने बहुत जोश से मेरा स्वागत किया आतिथ्य कि..ा तो उन की आदत थी लेकिन इस बात के आभारी थे कि आपके कारण मुझे अहमदियत का मार्ग मिला और बहुत स्वागत करते थे। सदर साहिब जमाअत बिलाल साहिब की खेलों के कपड़ों की दुकान थी। वह कपड़ों में सब ग़रीब भाइयों की मदद करते थे, भले ही उनकी दुकान पर कपड़े न हों, वह कहीं से भी उपलब्ध खरीद कर उपलब्ध करा देते थे। बड़े सम्मान वाले थे किसी अहमदी को इस अवस्था में न देख सकते थे कि उस के पास कोई पहनने के लिए कुछ भी न हो और अगर उसे कोई समस्या है तो वह सभी प्रकार की जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करते। वह अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखने वाले थे उन्होंने उन्हें सर्वश्रेष्ठ स्कूलों में भर्ती कराया कहते हैं मरहूम की मृत्यु से दो दिन पहले हम उनके घर में नमाज़ पढ़ रहे थे कि सचिव माल ने बताया कि उन्होंने वसीयत और तहरीक जदीद और तहरीक जदीद के सभी वाजिबुल अदा चंदे अदा कर दिए हैं बल्कि नई ज़मीन ख़रीदी थी उसे भी वसीयत में शामिल करवाया। बड़ा नियमित चन्दों का हिसाब रखने वाले, उनको अदा करने वाले, समाज सेवा करने वाले, नमाज़ों और इबादत का बड़ा आयोजन करने वाले, ख़िलाफत के साथ बेहद संबंध रखने वाले, हर ख़ुत्बा को सुनते थे। बल्कि सदर साहिब लिखते हैं कि जब मैं ख़ुत्बा का सारांश अगले सप्ताह सुनाता तो यह मुंह ढांपकर रोने लगते थे और हमेशा कहते थे कि लगता है समय के ख़लीफा मेरे बारे में या मुझ से बात कर रहे हैं। उन्होंने पीछे रहने वालों में ग्यारह वर्ष का एक पुत्र छोड़ा है और एक बेटी बारह वर्षों की छोड़ी है। जर्मनी में उनके बड़े भाई अहमदी हैं लेकिन दो भाई और बहन अहमदी नहीं थे और विरोध भी बहुत अधिक था। जब उनके जनाज़ा का समय आया तो अल्लाह तआला ने ख़ुद ही यह व्यवस्था की कि उनके भाई ने कहा कि आप लोग अर्थात अहमदी जनाज़ा पढ़ लें और हमारी मस्जिद में आकर जनाज़ा पढ़ लें। को ई रोक नहीं है और कहते हैं कि अल्लाह तआला की कृपा से बहुत से लोगों ने हमारे पीछे नमाज़ जनाज़ा अदा की।

दूसरा जनाज़ा सलमा मीर साहिबा, भूतपूर्व सदर लजना इमाउल्लाह कराची का

है, जो अब्दुल क़ादिर साहिब की पत्नी थीं। उन का 17 दिसंबर 2018 ई को 90 साल की उम्र में वफ़ात हो गई है। आपके पिता मीर इलाही बख्श साहिब सहाबी थे जो शेख़पुर ज़िला गुजरात के थे। उन्होंने 1904 ई में बैअत की थी और सलीमा मीर की माता मरियम बेगम साहिबा मदरस्सतुल ख़वातीन कादियान की पढ़ी लिखी थीं। उन्हें विशेष रूप से कुरआन शरीफ के शिक्षण से लगाव था। 1946 ई में सलमा मीर साहिब का विवाह हुआ और उपमहाद्वीप के विभाजन के बाद कराची आए और 1961 ई में यह लोग ईरान चले गए, तो वहां तीन चार अहमदी परिवार थे, जुम्अ: और मीटंग आदि का आयोजन किया। 1964 ई में उनके पति की मृत्यु हो गई और उसके बाद उनके भाई मीर अमानुल्ला साहिब के पास कराची आए। आठ बच्चों की तरबीयत के बाद शिक्षा का क्रम भी शुरू हुआ। उन्होंने बी.ए तक शिक्षा प्राप्त की। इसके साथ ही लजना के दफतर में काम करना शुरू किया। डाक का उत्तर देने का काम शुरू किया। फिर विभिन्न स्थितियों में उन्हें कराची लजना में काम करने की तौफीक़ मिली। 1981 ई में जब आयोजन समिति का गठन हुआ तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने आप को आयोजन समिति का अध्यक्ष नामित किया। कहती हैं कि हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने जब मुझे समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया तो जब यह घोषणा की तो मेरी अजीब स्थिति थी। मैं हैरानी की अवस्था में थी कि मैं इस ज़िम्मेदारी को कैसे उठाऊंगा। कहती हैं कि एक तरफ इमाम का आज्ञापालन और दूसरी ओर मेरा कम अनुभव और व्यापक कार्य के अनुभव की कमी महसूस होती थी। कहती हैं कि मैं दुआओं में लग गई था। गिड़गिड़ा कर ख़ुदा तआला से दुआ मांगी। काम शुरू किया और जल्दी जल्दी मज्लिस अमाला की बैठक बुलाई गई। कयादतों के दौरे किए और इन सबके सामने आज्ञाकारिता और संगठन से प्रतिबद्धता, इस्लामी नैतिकता अपनाने, बिदअतों के ख़िलाफ जिहाद करने, अवैध आपत्तियों से पूरे तरह से परहेज करने, कुछ को आदत होती है महिलाओं को विशेष रूप से, अब तो पुरुषों को भी बहुत है कि इसका कारण है कि सिस्टम पर आपत्तियों को शुरू कर देते हैं उन्होंने कहा कि हमारी सभा में किसी प्रकार की आपत्ति नहीं होनी चाहिए और अक्सर इस्तिग़फार की तरफ बार बार ध्यान दिलाया और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस को भी पत्र लिखती थीं। कहती हैं कि अल्लाह तआला ने फज़्ल किया कि कराची की लजना तरक्की करने लगीं। 1961 ई से उन्होंने ईरान में लजना का काम शुरू किया था और फिर पाकिस्तान में 1986 ई में जब लजना कराची का केंद्रीय लजना फिर संबद्ध हुआ तो हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने आप को सदर लजना कराची नामित फरमाया और उन्होंने 1986 ई से 1997 ई तक सदर लजना कराची के फर्ज़ अदा किए। लजना कराची ने किताबों के प्रकाशन में आप के समय में बड़ा काम किया जिन में साठ किताबें दो सोविनयर आप की सदारत के समय में प्रकाशित हुईं। आप के समय में दाई इल्लाह कि किलास का आरम्भ हुआ इस पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे ने बहुत ख़ुशी का इज़हार किया और फरमाया कि अल्लाह के फज़ल से अच्छा काम चल रहा है दिल से दुआएं उठती हैं। अल्लाह आप की उम्र और सेहत में बरकत दे और फिर आगे आप के वफादार साथियों को दुनिया और आख़रत में बेहतरीन बदला दे।

इन के काम की बहुत सारी घटनाएं हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह और हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालसि रहमहुल्लाह ने इन के सेवाओं को बहुत सराहा है। एक ख़त में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमुल्लाह ने लिखा कि आप की तरफ से लजना कराची की रिपोर्ट और बहुत ही श्रद्धावान भावनाएं तथा आस्था पहुंची। मैं आप सब की भावनाओं और श्रद्धा को दिल की गहराइयों से सम्मान करता हूं और अपने रब्ब से हमेशा आप की भलाई का इच्छक हूं और कहता हूं कि वे दिन पहले से बहुत बढ़ा कर शान के साथ लौटा दे जिन की यादें मुझे बहुत प्यारी हैं।

सलीमा मीर साहिबा 36 साल की उम्र में विधवा हो गई थीं। उन की बेटी कहती हैं कि परन्तु कभी भी किसी प्रकार की बे-सब्री और ना-शुक्री के शब्द उन के मुंह से नहीं निकले। हमेशा हर बात में अल्लाह तआला का शुक्र अदा करतीं और हमेशा सकारात्मक सोच रखतीं और बच्चों में यह चीज़ देखना चाहती थीं। उन की एक बेटी कहती हैं कि मेरे पति बीमार हो गए और उन की अन्तिम बीमारी ही थी। कहती हैं कि मेरी अम्मी सलीमा मीर साहिबा मेरे पास आई हुई थीं। जो पहली चीज़ उन्होंने मुझे दी वह मल्फूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम थी और कहा कि मैंने भी तुम्हारे अब्बा की वफात के बाद मल्फूज़ात के साथ ज़िन्दगी गुज़ारी है और सब कुथ ख़ुदा के हवाले कर दिया है। यह कहा करती थीं कि सब मुहब्बतों पर ख़ुदा तआला की मुहब्बत हावी होनी चाहिए। बेटी कहती हैं कि जब पति का अंतिम समय था और डॉक्टर ने मुझे साइन (sign) करने के लिए कहा तो ज़ब्त नहीं कर सकी और रोने लगी और रोते हुए मेरी आवाज़ अधिक हो गई। मेरी मां ने भी सुन ली। कहती हैं उस समय मैं बहुत दर्द में थी। सलीमा मीर साहिबा वहां बैठी हुई थीं। बेटी का पति मर रहा था । बेटी बहुत कष्ट में थी। कहती हैं कि जब मैं अस्पताल से जाने लगी तो अपनी मां सलीम मीर साहिबा के पास रुकी। लेकिन अम्मी ने बहुत कठोर शब्दों में कहा कि तुम मेरी बेटी हैं। मेरी बेटी इतनी निराश नहीं हो सकती और तुम ने इतनी ऊंचीं आवाज़ क्यों निकाली? कहने लगीं कि जो धैर्य पहले समय में होता है वही धैर्य है अन्त में तो सब तो धैर्य आ जाता है कहती हैं मुझे नसीहत की कि तुम्हारा पति ख़ुदा की अमानत था उस ने दिया था उस की चीज़ थी उस ने वापस ले ली।

चार बेटियों के बाद पहला बेटा पैदा हुआ और कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई, तो बहुत धैर्यपूर्वक और साहस से कहती थीं कि अल्लाह की अमानत थी उस ने ले ली। पंजाबी में कहती थीं कि " ख़लीफे दा लड़ नहीं छडना" अर्थात ख़लीफा की दामन कभी नहीं छोड़ना। ख़िलाफतके साथ जुड़े रहना। पर्दे का बहुत अधिक प्रबन्ध करने वाली थीं। जहां भी पर्दे में कमी देखती वहां बड़े अच्छे तरीके से समझा देतीं ताकि दूसरों को भी बुरा न लगे। उनकी एक बेटी कहती हैं कि मेरी छोटी बहन के लिए रिश्ता आया और लड़का ने कहा, "मैं लड़की को पहले देखूंगा और फिर बात आगे बढ़ेगी।" कहती हैं कि हम ने अम्मी को कहा कि बहन को नकाब के स्थान पर स्कार्फ में सामने कर देते हैं। अपनी बेटी का रिश्ता था। कहती हैं इस पर अम्मी ने शीघ्र जवाब दिया कि रिश्ता होता है तो हो परन्तु निकाब के बिना नहीं जाएगी। एक बच्ची का लंदन में एक ड्राइविंग टेस्ट था और प्रशिक्षक पुरुष था, फिर बेटी के साथ चल पड़ीं कि,मर्द के साथ तुम्हें अकेले नहीं जाने दूंगा। लोगों ने उपहास भी किया लेकिन उन्हें दुनिया की कोई परवाह नहीं थी। सिर पर दुपट्टा लेने के लिए या नकाब लेने के लिए हमेशा कहा करती थीं। लजना की जो किताब है जिसमें सारे ख़लीफाओं के उपदेश हैं इस का नाम है "ओढ़नी वालियों के लिए फूल"। तो यह कहती थीं कि अगर तुम फूल लेना चाहती हो तो ओढ़नी लेनी पड़ेगी। फूल तो उसी के लिए हैं जो पर्दा करने वाली है। एक निवासी कहती हैं कि जब मेरी शादी होने वाली थी तो हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा की किताब में से बच्ची के विदाई के अवसर पर की गई नसीहतों को लाइन ला कर मुझे दिया कि इसे बार-बार पढ़ो।

कहती हैं कि रात देर तक कुंवारी लड़कियों का प्रोग्रामों में रहना पसंद इन्हें पसन्द नहीं था। हमारे सहेलियों के घर में को ई फंगशन होता तो ख़ुद साथ जाती थीं। आज कल भी कई लड़कियां रात गुज़ारने या Night Spend के लिए लिखती हैं। यह एक ग़लत तरीका है हमारी बच्चियों को इस से बचना चाहिए।

कहती हैं अगर हमारी फज्र की नमाज़ छूट जाती तो सारी दिन हम से बात नहीं करती थीं। यह हमें इनकी बहुत बड़ी सज़ा होती थी। एक बार यहाँ शिकागो अमेरिका में आई हुई थीं तो एक समारोह में एक महिला ने संगीत लगाया और नृत्य करने वाले अंजाज़ में उठी तो आप ने पीछे से जाकर उसे पकड़ लिया और कहने लगी कि यह संगीत बंद करो। क्या तुम्हें नहीं पता कि नाचने वालियों को क्या कहा जाता है?

एक ईसाई लड़की को पाला। उसे दुआएं सिखाईं। बल्कि वह कहती थी मैं तो आधी अहमदी हो चुकी हूं।

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

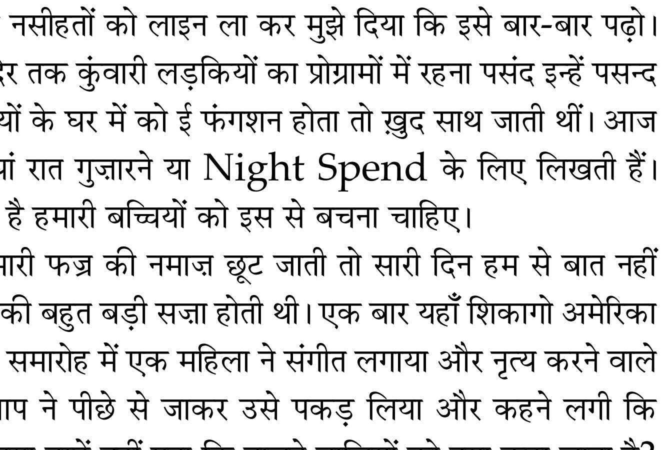

अमतुल बारी नासिर साहिबा का कहना है कि अल्लाह तआला ने आपा सलीमा मीर साहिबा से लजना कराची की लंबी सेवा ली। आप इस दुनिया में नहीं रहीं, लेकिन आपकी प्रशिक्षित सदस्य दुनिया के कोने कोने में लजना के काम करते हुए आप का नाम ज़िन्दा रखेंगी। आपका नाम उत्तम काम करने का एक उदाहरण बन गया है और कहती हैं हमेशा बड़ी देखभाल किया करती थीं। काम सिखाया करती थीं । अपने नाम की उन्हें अधिक इच्छा नहीं थी बल्कि यह इच्छा थी कि जितनी इन के साथ काम करने वालियां उन को काम करना आ जाए और जब भी किताबें प्रकाशित हुईं, तब भी उन्होंने अपनी टीम को प्रोत्साहित किया। अन्तिम सालों में प्राय देश से बाहर जाना पड़ा। जमाअत का काम प्रभावित न हो इसलिए ख़ुद ही केंद्र को चिट्ठी लिखकर एक दूसरी सदर मंज़ूर करवा लिया और बहुत अच्छी तरह से एक मीटिंग बुलाई और उन्हें फूलों के हार पहनाए। और श्रीमती भट्टी साहिबा को सदर की कुर्सी पर बिठा कर उन की सेवाओं के बारे में और आज्ञाकारिता के बारे में बहुत अच्छे रंग में तक़रीर की और बहुत सम्मान से अपनी ज़िम्मेदारियों से अलग हो गईं। यह लिखती हैं कि इस तरह सदारत एक से दूसरे को दी जाती है।

इसलिए जो कभी-कभी सेवा सेवाओं से हटाए जाते हैं या उन की स्वीकारता नहीं दी जाती, वे बड़ी आपत्तियां शुरू करते हैं उनके लिए यह सबक है कि अगर काम मिल जाए तो अल्हम्दो लिल्लाह और अगर नहीं मिलता तो तब भी अल्लाह का शुक्र अदा करें और काम करने के लिए, जमाअत की सेवा करने के अन्य तरीके खोजें। लेकिन यह आवश्यक नहीं कि उहदा ही मिले तो काम हो सकता है।

फिर कहती हैं कि सारे काम गोपनीयता से करने वाली थीं। दिल की बात करके कभी यह अंदेशा नहीं होता था कि यह बात कहीं निकल जाएगी। अमतुल बारी नासिरा साहिबा कहती हैं कि कैसे वह सारे राज़ों को अपने सीने दफन कर लेती थीं। यह बहुत विशेषता है जिस की कमी आजकल पुरुषों में भी है।

अमतुन्नर साहिबा कराची से लिखती हैं कि सलीमा मीर साहिबा बेहद प्यार करने वाली, निस्वार्थ, बहुत विनम्र, अपनी ज़ात को पीछे रखकर दूसरों के काम को बेहद सराहने वाली, हंसमुख महिला थीं। एक सुन्दर चेहरे के साथ ख़ुदा तआला ने उन्हें एक सुन्दर और नरम दिल भी दिया। कहती हैं मुझे सदर बनाया, तो मैंने कहा कि यह क्षेत्र बहुत व्यापक है और मेरे पास अनुभव भी नहीं है, मेरे पास सवारी भी नहीं है। उन्होंने कहा कि मेरी बेटी तुम्हारे पास ही रहती है। जब आपको जाना हो, तो उसे बताएं कि उसे कह दिया करो वह कार उपलब्ध करा देगी या मुझे बता दिया करो मैं अपनी कार भेज दूंगी और किसी प्रकार की चिंता करने की ज़रूरत नहीं। उन में बहुत अधिक नम्रता थी। काम करने वालियों के साथ बैठकर ख़ुद काम करवाया करती थीं।

कराची की एक सेक्रेटरी इशाअत ने लिखा है कि आपा सलीमा मीर साहिबा के 1986 ई से काम करने का मौका मिला है। मैंने उन्हें बहुत ही ग़रीबों का ध्यान रखने वाला पाया। एक बार कराची की बहुत अधिक सेवा करने वाली औरत जो किसी कारण से जमाअत के पीछे हट गई थीं उन के बारे में पता चला कि वह बहुत बीमार हैं और उसके पास जमाअत के कुछ बहुत महत्तवपूर्ण कागज़ हैं। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की दुआओं और मार्ग दर्शन में आपा सलीमा के मार्गदर्शन में उन से सम्पर्क किया गया लेकिन कुछ प्राप्त होने से पहले उनकी वफात हो गई। उन के एक रिश्तेदार से कहा कि अगर उनके पास इस प्रकार का कोई सामान है, तो हम क़ीमत अदा करने के लिए तैयार हैं, इसे हमें दें क्योंकि यह जमाअत का इतिहास था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के तबर्रुकात थे तो हमें एक सन्दूक मिला जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथों मुबारक से लिखे हुए पत्र थे और हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल की अपने हाथ की लिखीं लेखनी थी और सन्दूक भी ऐतिहासिक था। उस को बहुत बुद्धिमानी से उन्होंने लिया। जो अहमदी महिला पीछे हट गई थीं उन का इलाज भी उन्होंने करवाया।

प्रत्येक लिखने वाले ने लिखा है बड़े सम्मान वाली, हौसला वाली, धैर्य का प्रदर्शन करने वाली और नैतिकता का मुंह बोलता प्रमाण, ख़िलाफत से जुड़ी रहने वाली, ख़िलाफत से जुड़े रहने की हिदायत करने वाली, नेकियों पर कायम रहने वाली, नेकी की नसीहत करने वालीं अपने हों या ग़ैर सभी को एक ही तरीके से नसीहत करती थीं। और यह नहीं कि अपने बच्चों से नज़र फेरने वाली थीं बल्कि अपनी बेटियों को भी नसीहत की और अल्लाह तआला पर बहुत अधिक भरोसा था। अल्लाह तआला की ख़ुशी पर हर समय प्रसन्न रहने वाली थीं। अल्लाह तआला ने उन के बच्चों को भी, उन की बेटियों को भी उन की नेकियों को जारी रखने की तैफीक़ प्रदान करे।

अभी नमाज़ जुम्अ: के बाद ये दोनों जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा।

☆ ☆ ☆

संशोधन

अख़बार 22-29 मार्च 2018 ई मसीह मौऊद विशेषांक पृष्ठ 4 में भूल-वश निम्नलिखित इबारत लिखी गई है

"अत्याचारी हैं वे लोग जो कहते हैं कि आप अलैहिस्सलाम के मानने वाले नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम से कम करते हैं। "

जबकि ठीक इबारत इस प्रकार है

"अत्याचारी हैं वे लोग जो कहते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वाले नऊज़ुबिल्लाह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुक़ाम से आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम को कम करते हैं।"

इदारा इस भूल के लिए पाठकों से क्षमा का प्रार्थी है।

अल्लाह तआला हमारी ग़लतियों को माफ फरमाए और

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

और उसकी अदभुत और अलौकिक शक्तियों पर विश्वास करते हैं अपितु ऐसे लोग बहुत हैं जिनको उस सर्वशक्तिमान ख़ुदा पर विश्वास नहीं है, जिसकी आवाज़ को प्रत्येक वस्तु सुनती है, जिसके समक्ष कोई भी बात अनहोनी नहीं। यहां याद रहे कि प्लेग इत्यादि में इलाज कराना कोई पाप नहीं बल्कि एक हदीस में आया है कि ऐसी कोई बीमारी नहीं जिसके लिए ख़ुदा ने दवा पैदा न की हो । परन्तु मैं इस बात को पाप समझता हूँ कि ख़ुदा के उस निशान को प्लेग के टीके द्वारा संदिग्ध कर दूं जिसको वह हमारे लिए धरती पर बड़ी सफ़ाई से प्रकट करना चाहता है। मैं उसके सच्चे निशान और सच्चे वायदे को सम्मान न देकर टीके की ओर झुकना नहीं चाहता। यदि मैं ऐसा करूँ तो मेरा यह पाप दण्डनीय होगा कि मैंने ख़ुदा के उस वायदे पर विश्वास न किया जो मुझे दिया गया। यदि ऐसा हो तो फिर मुझे आभारी उस डाक्टर का होना चाहिए जिसने इस टीके की खोज की, न कि ख़ुदा का जिसने मुझे आश्वस्त किया कि प्रत्येक जो इस चार दीवारी के अन्दर है मैं उसे सुरक्षित रखूँगा।

(कश्ती नूह रूहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 1)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيلِ لَأَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ

(अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit :www.alislam.org/urdu/library/57.html

पृष्ठ 2 का शेष

पर अनुकरण भी होता है।

इन महमानों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के साथ मुलाकात 8 बज कर 15 मिन्ट तक जारी रही। अंत में, सभी मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

लास एंजिल्स (अमेरिका) से बौद्ध समुदाय से संबंध रखने वाले प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

उसके बाद लॉस एंजिल्स (अमेरिका)से बौद्ध समुदाय से संबंध रखने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत पाई।

लॉस एंजिल्स संयुक्त राज्य अमेरिका से बौद्ध धर्म की शाखा Compassionate Service Soceity (CSS) के 21-सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल जलसा में भाग लेने के लिए आए थे।

* फाउंडेशन के संस्थापक और अध्यक्ष Nhan Khac Le ने पहले अपने सदस्यों के परिचय से शुरुआत की। प्रतिनिधिमंडल में डॉक्टरों, शिक्षकों, इंजीनियरों, पत्रकारों और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के शामिल थे।

* प्रतिनिधिमंडल के नेता और सदर Nhan Khac Le ने हुज़ूर अनवर की सेवा में अर्ज़ किया कि जब से मेरा अहमदी मित्रों के साथ संपर्क हुआ तो मैंने पहली बार इस्लामी दुआएं पढ़ी हैं। इस्लाम प्रेम और शांति पर आधारित है मुझे ख़ुशी है कि हमारा संबंध अहमदियों से बन गया है हम ने केवल अहमदियों में प्यार और मुहब्बत देखी है। जिस तरह से हमारा यहाँ ध्यान रखा गया है हम बता नहीं सकते।

महोदय ने कहा: यह बहुत ही संगठित जलसा है। आज्ञाकारिता की उच्च गुणवत्ता है। सब लोग स्वयंसेवक काम कर रहे हैं और सेवा की भावना से भरे हुए हैं। यह सब हुज़ूर अनवर के कारण है अब हम अमेरिका जाएंगे और लोगों को ख़िलाफ़त अहमदिया के बारे में बताएंगे। हमें लगता है कि हम में से कुछ लोग मुस्लिम बन जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: इस दुनिया में यह आवश्यक है कि हम मानवता का सम्मान करें और इसलिए हम ने मानवता की सेवा करने वाली संस्था का नाम "ह्यूमेन्टी फर्स्ट" रखा हुआ है। महोदय ने कहा: हुज़ूर बिल्कुल सीधी और स्पष्ट बोलते हैं और बहुत कोमल और दयालु होते हैं। हमारी इच्छा है कि हुज़ूर अमरीका आएं और वहां आकर हमारा मार्ग दर्शन करें और बौद्ध धर्म के अनुयायियों से मिलें। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने फरमाया हम बुद्ध अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का एक नबी समझते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल के नेता और सदर से बुद्ध धर्म के विभिन्न संप्रदायों और उनमें अंतर और उनके विभिन्न समुदायों के मध्य अन्तर के बारे में पूछा।

मुलाकात के अंत में इस प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की सेवा में एक उपहार पेश किया और बताया कि सोवेनियर पंद्रह सौ साल पुरानी लकड़ी से बना हुआ है और बड़ा खास है।

इस संगठन के संस्थापक और संस्थापक Nhan Khac Le ने बताया: जलसा के अवसर पर स्वयंसेवकों ने जिस प्रकार 38,000 लोगों की सेवा की। वह प्रशंसा के योग्य है। मैं यहां से एक सकारात्मक और हौसला बढ़ाने वाली ऊर्जा ले कर लौट रहा हूं। जमाअत अहमदिया वर्तमान इमाम समय के एक महान नेता नहीं हैं।

* इस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य Naoko Nakajima नाओको नाकाजीमा साहिबा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: "मैं जमाअत अहमदिया के आतिथ्य से बहुत प्रभावित हूं। मानवीय अधिकारों के लिए जमाअत अहमदिया द्वारा किए गए प्रयास, विशेषकर उन स्थानों पर जहां प्राकृतिक आपदाएं हों प्रशंसा योग्य हैं। इसी तरह जमाअत अहमदिया की शैक्षणिक क्षेत्र में सेवाएं बहुत सराहना योग्य हैं।

* प्रतिनिधिमंडल की एक महिला Kim Hanh Thi Le साहिबा जो कि एक Event reporter हैं ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: ऐसे जलसा में मेरा यह पहला अनुभव था। कैलीग्राफी और अरबी भाषा पर प्रस्तुतियाँ बहुत अच्छी और जानकारी पूर्ण रही हैं।

इस प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य जूडी गुयेन ने कहा: यह मेरे लिए एक अद्भुत अनुभव था। स्वेच्छा से युवा और बड़े लोगों का धैर्य के साथ लोगों की सेवा करना यह एक अविश्वसनीय कार्य है।

वफद के सदस्य मिन्ह टैम नेल्सन, जो इवेन्ट रिपोर्टर के रूप में शामिल थीं ने कहा: जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए बहुत भाग्य की बात है। जैसे स्वयंसेवकों ने हमारी सेवा की और हमारी जरूरतों पर ध्यान दिया, यह बहुत अधिक अच्छा और प्रभावी था। सबसे बढ़ कर इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मुलाकात थी। मैं आज तक जितनी भी कम्यूनिटी के मेम्बरों से मिला हूं उन में इमाम जमाअत अहमदिया सबसे बुद्धिमान और सौम्य दिल के मालिक हैं।

* वफद के एक सदस्य Mai-Ly Thi Pham माई-लाई थी फाम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा की व्यवस्था बहुत ही आश्चर्यजनक थी और यह मेरे लिए सम्मान की बात है। मैंने सामान्य रूप से मुसलमानों के बारे में और विशेष रूप से अहमदी मुसलमानों के बारे में बहुत कुछ सीखा है। जमाअत अहमदिया की नि:स्वार्थ होकर सेवा करने की शिक्षा हमारे बौद्ध धर्म की शिक्षा जैसी है। जमाअत अहमदिया और बौद्ध धर्म के बीच समानताएं देखकर लगता है कि दुनिया सिमट सी गई है और परिवार बढ़ता जा रहा है। मैं आपका धन्यवाद अदा करती हूँ।

*दल के एक सदस्य Wen Wah Chew ने कहा: महात्मा बुद्ध और जमाअत अहमदिया की शिक्षाओं का आधार एक जैसी चीज़ों पर ही है अर्थात मानव के अधिकार, मुहब्बत, प्यार वफ़ादारी और सहानुभूति। मैं इमाम इमाम जमाअत अहमदिया का विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहता हूं जिन्होंने अपने बहुत ही मूल्यवान समय में से हमारे लिए समय निकाला है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जमाअत अहमदिया के ख़लीफा बहुत नर्म, विनम्र और पवित्र इंसान है।

इसी प्रकार, प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने जमाअत के लिए अच्छी भावनाओं को व्यक्त किया और प्रतिनिधिमंडल के प्रत्येक सदस्य ने जलसा की व्यवस्था की सराहना की और हुज़ूर का धन्यवाद अदा किया।

मुलाकात के अंत में, प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर लेने का अवसर मिला। यह मुलाकात 8:30 बजे तक जारी रही।

कनाडा के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद कनाडा से आने वाले वफद ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

* कनाडा के से एक मेम्बर पार्लयामेन्ट Mr Ganett Genuis जलसा में शामिल हुए उन्होंने कहा कि उन का सम्बन्ध विपक्षी दल से है और वह केवल मानव अधिकारों के संबंध के बारे में विशेष रूप से काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह अल्जीरिया जाना चाहते थे लेकिन वीजा नहीं मिल सका।

महोदय ने अपनी पार्टी के लीडर का सलाम हुज़ूर तक पहुंचाया और कहा कि वह इस्लामी अर्थ व्यवस्था के बारे में जानना चाहता थे कि कैसे सरकारें अपने सिस्टम में इस्लामी व्यवस्था लाऐं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "आप हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी की किताब - न्यू वर्ल्ड ऑर्डर ऑफ़ इस्लाम पढ़ें। आप इस किताब को पढ़ने से आइडिया प्राप्त कर सकते हैं कि इस्लाम की आर्थिक व्यवस्था कैसी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: सबसे पहले, तो ब्याज खत्म करने की ज़रूरत है इस समय दुनिया से ब्याज को खत्म करना बहुत कठिन है। यह हर जगह है।

* ब्रेडफोर्ड ओन्टारियो के काउंसलर राज संधु साहिब भी कनाडा के प्रतिनिधिमंडल में शामिल थो। ब्रैडफोर्ड के क्षेत्र में, जमाअत अहमदिया कनाडा ने अपने जलसा सालाना के लिए 250 एकड़ ज़मीन ख़रीदी है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने अपनी कनाडा की यात्रा के दौरान इस स्थान का दौरा किया था।

राज संधु ने कहा कि हम इस लिए ब्रिटेन के जलसा में शामिल हुए हैं ताकि हम समीक्षा कर सकें कि जमाअत अहमदिया का जलसा कैसा होता है। क्योंकि कनाडा की जमाअत ब्रैडफोर्ड में अपना जलसा करना चाहती है। मुझे जलसा के प्रबन्ध और स्वयंसेवकों के बारे में बहुत हैरानी हुई कि इतने कम समय में इतना बड़ा जलसा किस प्रकार आयोजित किया गया। मैं कनाडा में जमाअत के जलसा में शामिल होता रहा हूं परन्तु वह जलसा तो बहुत छोटा होता है। मेरी दुआ है कि जमाअत अहमदिया को तरक्कियां मिलती रहें। हुज़ूर अनवर से मुलाकात का भी अवसर प्राप्त हुआ जिस से मैंने बहुत लाभ उठाया है मुझे आशा है कि एक दिन हमें इस प्रकार के जलसे ब्रैडफौर्ड में आयोजित करने का अवसर मिलेगा और उन से आप की जमाअत लाभ उठाएगी और उस क्षेत्र के शहरी भी लाभ उठाएंगे।

* पीस विलेज (वान) की परिषद Marilyn Iafrate साहिबा ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह की सेवा में कहा कि आपके समुदाय की महिलाएं शानदार महिलाएं हैं। बहुत पढ़ी लिखी रौशन विचारों वाली और संगठित हैं। महोदया ने कहा कि मुझे जलसा सालाना में शामिल होकर बहुत ख़ुशी हुई। जलसा के दोनों दिन मेरे लिए बहुत ज्ञानवर्धक थे। मैंने जलसा से बहुत कुछ सीखा। विशेष रूप से मेहमानों की तकरीरें बहुत अच्छी थीं। और विशेष रूप से इमाम जमाअत अहमदिया की तकरीर सुन कर आनन्द मिलता है कि सारे मुसलमान ऐसे नहीं हैं जैसा कि हम रोज़ अख़बारों में देखते हैं। उन में बहुत से एसे भी हैं जो शांति, प्यार और सुरक्षा का पालन करने वाले हैं। मैं ख़लीफा की बहुत सराहना करने वाली हूं कि उन्होंने हमारे सामने इस्लाम की शांति की शिक्षा को विस्तार से बताया है।

* संसद सदस्य Ganett Genuis ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: अहमदिया मुस्लिम जमाअत मानवता के अधिकारों के लिए बहुत ज्यादा काम कर रहा है। मैं विशेष रूप से पाकिस्तान और अल्जीरिया जैसे उन देशों पर ध्यान देता हूं जहां अहमदियों पर अत्याचार किए जा रहे हैं। मुझे जलसा सालाना से बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला कि हम किस प्रकार मानवीय अधिकारों को बेहतर तरीके से हासिल कर सकते हैं। यहां विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हो कर और लोगों से मिलने के बाद, अब मैं संसद के सदस्य के साथ-साथ इन मुद्दों के ख़िलाफ बेहतर रूप से खड़ा हो सकता हूँ।

कनााडा के प्रतिनिधि मंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात 8 बज कर 40 मिन्ट तक जारी रही। इस के बाद प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ बारी बारी तस्वीर तस्वीर बनवाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

जमैका के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद जमैका से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। जमैका के प्रतिनिधिमंडल में पत्रकार और एक जमैका के प्रसिद्ध कवि और एक कार्यक्रम के आयोजक शामिल थे।

* प्रतिनिधिमंडल में शामिल पत्रकार ने सवाल है क्या इस्लाम एक राजनीतिक धर्म है या नहीं? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: "इस्लाम एक पूर्ण धर्म है जिस में सभी चीजों का मार्गदर्शन मिलता है। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक स्टेट के प्रमुख भी बने थे लेकिन आज कल के ज़माने में इस प्रकार नहीं है। आज धर्म अलग है और देश की राजनीति अलग है।

* प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य ने कहा कि मुझे यह बहुत अजीब बात लगी है कि पुरुष, महिलाएं अलग-अलग जगहों पर हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम महिलाओं को आज़ादी देते हैं। वे अपने कार्य स्वतंत्र रूप से व्यवस्थित हो कर करती हैं रिकॉर्डिंग और वीडियो बनाने के लिए उनके पास अपने कैमरे चलाने वाली औरतें हैं उनके पास अपनी सुरक्षा टीम है। हम इस प्रकार उन्हें स्वतंत्रता देते हैं कि वे अपनी प्रत्येक चीज़ की ख़ुद ज़िम्मेदार हों और हमारी महिलाओं को यही तरीका पसन्द है और वे इस में बहुत ख़ुशी और आराम महसूस करती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आपने सुना है कि मैंने लजना के भाषण में कहा था कि इस्लाम कहता है कि पुरुषों और महिलाओं के काम में श्रम का विभाजन है, श्रम का एक विभाजन है। दोनों के अलग-अलग कर्तव्य और जिम्मेदारियां हैं। महिलाओं के कर्तव्यों में शामिल है कि उन्हें अपने बच्चों को प्रशिक्षित करना चाहिए, जबकि मर्द का यह कर्तव्य है कि वह अपने घर के पूरे व्यय को पूरा करे। महिलाएं पूरी तरह से अलग नहीं हैं एक ही प्रणाली के अधीन हैं। मैंने ख़ुद महिलाओं के पास जा कर तक़रीर की थी।

* एक मेहमान ने पूछा कि जमैका के लिए आप का क्या प्लान है? इस सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: केवल जमैका के लिए नहीं हमारी योजना तो पूरी दुनिया के लिए है कि इस्लाम के सच्चे संदेश को पूरे विश्व में फैलाओ और यह हमारा मिशन है।

जमैका के प्रतिनिधि मंडल की मुलाकात हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से 8 बज कर 50 मिनट तक चली। मुलाकात के अंत में, सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीरें बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

बेलीज़ के वफद की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात

इस के बाद बेलिज़ से आए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। बेलीज़ से 4 आदमियों पर आधारित एक प्रतिनिधिमंडल आया था जिस में बेलीज़ की राजधानी Belomopan के मेयर Khalid Belisle साहिब, टेलीविजन स्टेशन एफ.एम के पत्रकार और एक कार्यक्रम की मेज़बान Deborah Seoul साहिब शामिल थे।

पत्रकार ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में कहा कि उन को जलसा बहुत अधिक पसन्द आया। जलसा के सारे प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। प्रत्येक स्थान पर मैंने अमन और शान्ति ही देखी। प्रत्येक तक़रीर में अमन तथा शान्ति का पैग़ाम ही था।

मेयर साहिब ने भी जलसा के प्रबन्धों की प्रशंसा की और कहा कि मुझे कुरआन करीम के अतिरिक्त और कोई किताब बताएं जो मैं पढ़ सकूं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप इस्लामी सिद्धांतों के नीति दर्शन को पढ़ें।

मेयर खालिद बेलिसले साहिब ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: इस जलसा सालाना में शामिल होना मेरे लिए एक महान अनुभव था। मुझे लगा जैसे जमाअत में हर कोई मेरी सेवा में था। इस अनुभव से मेरे दिल में इस्लाम को सीखने के लिए बहुत रुचि पैदा हुई है। यहां से मैं एकता और भाईचारा का सन्देश देश में वापस ले जा रहा हूं। यह एक इस प्रकार की चीज़ है जो मुझे बार बार विभिन्न स्थानों पर दिखाई दी है। काश में इसे एक बोतल में बंद कर के अपने साथ बेलिज़ में ला जा सकता ताकि इसे अपने देश के साथ साझा करता।

उन्होंने कहा: जलसा की व्यवस्था बहुत अधिक अच्छी थी। जैसे मेरा यहां स्वागत किया गया था। मैं हमेशा याद रखूंगा। मैं हमेशा आप लोगों का कृतार्थ रहूंगा कि आपने मुझे यहाँ आने के लिए आमंत्रित किया।

कहने लगे कि एक दिन मेहमानों की मार्की में अकेला था कि कुछ ख़ुद्दाम मेरे पास आ गए। मुझे पता था कि ये लोग सिर्फ मेरे पास इसलिए आए थे कि मैं बाहर से आया था और शायद मैं अकेला महसूस कर रहा था। इस बात ने मेरे दिल पर बहुत गहरा प्रभाव किया है कि यहां के युवाओं को भी इस बात का अनुभव है कि मेहमानों के साथ कैसे पेश आना है।

* पत्रकार औरत मिस डेबोरा सोल साहिबा, ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: जलसा के प्रत्येक भाषण में शांति का संदेश था। इमाम जमाअत अहमदिया ने अपने पहले दिन के भाषण में कहा: किसी को अपना दुश्मन न समझो और वे जो आप को अपना शत्रु समझते हैं उन के लिए दुआ करो। मेरे लिए एक बहुत बड़ी शिक्षा थी।

इसके अलावा, मुझे महिलाओं में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाईचारा देखकर बहुत अच्छा लगा। इसी तरह एक दूसरे से अच्छे आचरण और प्रेम से मिलते देख कर बहुत ख़ुशी हुई, जिसने मेरे अन्दर भी दूसरों से मुहब्बत से व्यवहार करने की भावना पैदा कर दी। जलसा में तीन दिन का अनुभव मेरे लिए बहुत अच्छा था कि मैं अंत तक याद रखूंगी।

बेलीज़ के मुबल्लिग़ लिखते हैं: महोदया जब यहां आई तो उन की आलोचना होने लगा कि वह क्यों यहां आई हैं? इस मौके पर पत्रकार ने अपने फेसबुक पर लिखा, मैंने जलसा में तीन दिन बिताए, लेकिन मुझे एक बार भी इस्लाम में प्रवेश करने ले लिए नहीं कहा गया,बल्कि मुझ से पूछा गया कि क्या मैं सहज हूं या क्या मैं ख़ुश हूं और क्या मुझे किसी और चीज़ की ज़रूरत है जिस से मैं और अधिक आराम महसूस कर सकूं और मैं जहां भी गई मुझ से खाने ,पीने के बारे में पूछा गया था। किसी एक आदमी ने मुझे यह नहीं कहा कि अब मैं मुस्लिम बन जाऊं।

मुझे अतीत में विभिन्न जलसों और प्रोग्रामों में जाने का अवसर मिला है जिस का उद्देश्य लोगों को अपने धर्म में शामिल करना होता है परन्तु यहां यह बात नहीं थी। मैंने उन लोगों से भी मुलाकात की है जो 30 सालों से इस जमाअत के दोस्त हैं लेकिन अभी तक जमाअत में शामिल नहीं हुए हैं। मुसलमानों के इस समूह का सम्मान इसलिए किया जाता है कि मानवता की सेवा करते हैं और दुनिया में शांति का संदेश फैलाते हैं ।

* बेलेज़ से मिस ओलिविया डैशन, जो की वहां की जमाअत की सदर लजना भी हैं वह भी प्रतिनिधिमंडल में भी शामिल थीं। अपनी प्रतिक्रिया का ज़िक्र करते हुए उन्होंने कहा: मेरा यहां बहुत अच्छे तरीके से स्वागत किया गया। यहां का खाना

उस भोजन से अलग था जो हम खाते हैं लेकिन फिर भी खाना अच्छा था। यहां बहुत अच्छे और अनुभवी लोग काम कर रहे थे। मुझे एक घर की तरह महसूस हुआ। जलसा सालाना में शामिल होने का अनुभव बहुत अधिक अच्छा था इस अनुभव ने हमेशा के लिए मेरी ज़िन्दगी बदल दी है, खासकर ने जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ की बैअत की तो उस समय मेरी आँखें भीग गईं ।

महोदया ने कहा: जब हमारे प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात हुई तो मुझे कुछ कहने की हिम्मत तो नहीं हुई लेकिन हुज़ूर से मुलाकात अपने आप में मेरे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात थी। यदि मैं अहमदी होने से पहले इस जलसा में शामिल होती जो जलसा के कारण से ही अहमदी हो जाती। जलसा सालाना के इन दिनों को मैं कभी भूल नहीं सकती।

बेलीज़ के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात 8 बज कर 55 मिनट के तक जारी रही। इस के बाद प्रतिनिधि मंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आइसलैंड के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

इस के बाद आइसलैंड से आए हुए प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलने का सम्मान प्राप्त किया। आइसलैंड के प्रतिनिधिमंडल में छ: लोग शामिल थे, जिसमें दो नए अहमदियों के अतिरिक्त निम्न लिखित चार मेहमान शामिल थे।

(1) श्रीमती Mrs Tamila Gamez Garcell जो कि वहां Reykjavik की बहु सांस्कृतिक परिषद की सदस्य हैं।

(2) Ms Eyrun Eyporsdotteir जो चीफ इंस्पेक्टर हैं।

(3) Mrs Rosamunda Jona Baldursdottir जो कि Akureyri विश्वविद्यालय पुलिस विज्ञान परियोजना के प्रबंधक हैं।

(4) Ms Skulina Kristinsdottir साहिबा जो कि आइसलैंड विश्वविद्यालय में स्नातक की छात्रा हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया यहाँ आप ने देखा होगा कि एक अस्थायी शहर बसाया हुआ है और अस्थायी व्यवस्था है। सभी काम वालन्टीयरज़ कर रहे हैं और यहाँ के अनुशासन और सुरक्षा के लिहाज से भी आप ने देखा होगा कि कार्यकर्ता ख़ुद ही इन सारे कर्तव्यों को निभा रहे हैं और इतने बड़े जलसा में बिना किसी पुलिस के शांति है और पुलिस की ज़रूरत ही महसूस नहीं हुई।

इस पर मेहमानों ने अर्ज़ किया कि हम भी हैरान हैं कि इतनी बड़ी संख्या है और बारिश भी हुई, मौसम भी ख़राब रहा लेकिन इसके बावजूद कोई झगड़ा, त्रुटि पैदा नहीं हुई। सभी काम एक संगठित तरीके से आयोजित किए जाते हैं। हमें इस तीन दिनों में कोई लड़ाई नहीं दिखाई गई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दोनों नए अहमदियों से जलसा के बारे में पूछा जिस पर दोनों ने बहुत प्रसन्नता प्रकट की और कहा कि हम ने जलसा से बहुत कुछ सीखा।

* मेहमान महिलाओं ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: जलसा का यह अनुभव बहुत अद्भुत था। हम कोई विशेष उम्मीदों के साथ इस जलसा में शामिल नहीं हुई, लेकिन जब हम वापस घर लौटे तो हमें अनुभव हुआ कि हम एक नए इंसान की तरह लौटी हैं। नया मानव इस दृष्टि से कि हमारे दिमाग़ खुल गए हैं और मानवता का सम्मान पहले से कहीं अधिक बढ़ कर करने वाले हो गए हैं। हम उन लोगों का सम्मान करते हैं जो समृद्धि और दूसरों के सुधार के लिए अपना जीवन बलिदान करते हैं। और सालाना जलसा में मैंने प्रेम, मानवता और मुहब्बत के अलावा कुछ भी महसूस नहीं किया। हम कह सकती हैं कि अहमदियों ने हमें इस्लाम की सच्चाई बताई है।

शुरुआत में हमें यह आशा थी कि लोग हमें दूसरों की तरह देखेंगे, लेकिन इसके विपरीत हुआ और एक क्षण के लिए भी यह महसूस नहीं हुआ कि हम यहाँ welcome नहीं। हर क्षण हम से यूँ व्यवहार किया गया मानो कि हम हुज़ूर के व्यक्तिगत मेहमान हैं सारी व्यवस्थाएं अद्भुत थीं और सब कुछ अपने स्थान पर था। हमें हमेशा हमारे प्रश्नों के उत्तर मिलते हैं, क्योंकि हम जानते थे कि कुछ सवाल दूसरों को असहज महसूस कर सकते हैं। लेकिन तर्क के अनुसार हमारे मेज़बान के उत्तर आसानी से समझे जाने वाले थे। हम विशेष रूप से विभिन्न कपड़े और भोजन देखकर और चख कर लाभ उठाते हुए बाज़ार में गए। साहित्य भी दिलचस्प था। कई बार हमें इस बारे में सोचना पड़ता था कि इस प्रकार का प्रबंधन जो हर साल बढ़ रहा है, यह कैसे संभव है। यह बहुत ही आश्चर्य की बात है।

हमें कुछ सैर करने का अवसर प्राप्त हुआ जिस दौरान हमने जमाअत अहमदिया की सुन्दर मस्जिदें और अन्य सुन्दर जगहों को देखा। बहुत से लोगों को मिलने का मौका मिला और दिलचस्प बात करने का मौका मिला, जिसके माध्यम से दूसरों की सकारात्मक राय का भी ज्ञान हुआ। इस जलसा का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू और हमारे मेज़बान की बेहद ख़ुशी का कारण जमाअत अहमदिया सार्वभौमिक के इमाम की उपस्थिति थी। तथा रविवार के दिन इमाम जमाअत अहमदिया से मुलाकात का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसके दौरान समय की कमी के कारण उन्होंने हमारा संक्षिप्त परिचय पूछा और जलसा से संबंधित हमारे भाव भी जानना चाहे। साथ ही मुलाकात के अंत में हमारे delegation के साथ तस्वीर ली गई लेकिन हमारे यानी महिलाओं की इच्छा थी कि केवल महिलाओं की एक तस्वीर हो और इमाम जमाअत अहमदिया ने इस आवेदन को स्वीकार किया। हम सबका धन्यवाद अदा करना चाहती हैं।

आइसलैंड के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात 9 बज कर 5 मिनट तक जारी रही। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत हासिल की।

बेल्जियम के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

उसके बाद बेल्जियम से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत पाई। बेल्जियम के प्रतिनिधिमंडल में 21 नए अहमदी शामिल थे जिनमें से दो का संबंध मोरक्को से एक का नाइजर से एक का घाना से 5 का सेनेगल से 7 का गिनी कनाकरी से और 5 का संबंध से टोगो से था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने बारी बारी वफद के सारे सदस्यों से परिचय प्राप्त किया फरमाया: वफद के चार सदस्यों ने बताया कि उन्होंने आज ही बैअत की है।

* एक नई बैअत करने वाली श्रीमती "शीला कातियातु" साहिबा अपने चार बच्चों के साथ जलसा में आई थीं। उन्होंने वर्णन किया: मैंने इन तीन दिनों में इस्लाम के बारे में जो सीखा वह इससे कहीं बढ़ कर है जो मैंने अपने पूरे जीवन में सीखा था। हुज़ूर अनवर ने लजना से जो बच्चों के प्रशिक्षण के विषय पर संबोधन फ़रमाया मुझ पर उसका बहुत प्रभाव हुआ चूंकि ख़राब मौसम की वजह से कई कठिनाइयां हुईं, लेकिन फिर भी इस के बावजूद यह महसूस हो रहा था कि मैं हज करने आई हूं। जैसे हज का बदला बहुत बड़ा है और कई कठिनाइयों के बाद ही हज करना पड़ता है। इसी तरह इन तीन दिनों में मौसम के कारण कुछ परेशानी आई हैं और मैं जानती हूं कि इन तीन दिनों का इनाम बहुत अधिक है। यही कारण है कि मुझे महसूस हो रहा था कि मैं हज करने आई हूं।

*बेल्जियम से एक नई बैअत करने वाली फातिमा अल यूसुफ साहिबा भी अपने बच्चों के साथ मुलाकात में शामिल हुईं। उन्हें बैअत करने का सौभाग्य मिला। उन्होंने कहा: जलसा के दिनों में, यह विशेष रूप से महसूस किया गया था कि हमारी आध्यात्मिकता प्रगति कर रही है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताब सुन कर बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं वापस बेल्जियम जाकर नियमित जमाअत के कार्यक्रमों में भाग लिया करुंगी। यहां जमाअत के लोगों को निस्वार्थ सेवा करते देखकर मेरा दिल करता है कि मैं भी वापस जाकर इसी तरह जमाअत की सेवा करूं और जमाअत के लिए उपयोगी अस्तित्व बन सकूँ।

* वफद में शामिल एक औरत माटी नगौम साहिबा का कहना है कि मैंने पहले भी जलसा में पहले भाग लिया है। फिर भी मेरे पास अभी भी इस साल के सालाना जलसा के बारे में बहुत कुछ जानने का अवसर है। इस बार दूसरी बार मुझे ख़लीफ़ुतल मसीह से मिलने का अवसर मिला। हुज़ूर अनवर ने हमें जो भी नसीहत फरमाईं मुझे उन में सच्चाई और वास्तविकता नज़र आई जिस से हमने बहुत कुछ सीखा है और जो सम्मान तथा इज़्ज़त के उच्च स्तर हमें यहां देखने को मिले इन सब को देख कर हमें बहुत ख़ुशी हुई है।

* श्रीमती बेलू साहिबा भी चार बच्चों के साथ जलसा में शामिल हुईं। उन्हें बैअत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ परन्तु उन के पति बेल्जियम में बीमार हैं और उन्होंने अभी तक अपनी बैअत नहीं की है। श्रीमती बेलू ने इस साल जलसा सालाना में फिर

शामिल होने की इच्छा जताई थी लेकिन बाद में पति की बीमारी के कारण जलसा में भाग न लेने का इरादा किया। जब उनके पति को इस बारे में पता चला, उनके पति ने उन्हें जलसा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया और कहा कि तुम बच्चों को लेकर जलसा में ज़रूर शामिल होना। जलसा में शामिल होकर, हमारे ईमान में वृद्धि हुई, जिसका मैं शब्दों में वर्णन नहीं कर सकती। मैं पति के लिए दुआ का निवेदन करनी चाहती हूं कि अल्लाह तआला उन्हें भी अहमदियत में शामिल होने की तौफीक़ प्रदान करे।

*मती कसमान साहिबा बयान करती हैं कि अल्लाह तआला ने इस जलसा में शामिल होने वालों के लिए जो नेअमतें रखी हैं मैंने उन से भरपूर तरीके से लाभ उठाने की कोशिश की है जिस का अनुभव मुझे अभी से हो रहा है कि मैं उन बरकतों को अपने अन्दर अनुभव कर रही हूं। मुझे इस जलसा में शामिल होकर लोगों के साथ धैर्य के साथ पेश आने और उनके साथ अच्छे आचरण का प्रदर्शन करने की शिक्षा मिली है। क्योंकि अल्लाह तआला ने जो बरकतें इस जलसा को प्रदान की हैं वे अनगिनत हैं और यह सब जलसा सालाना ही की बरकतें है।

बेल्जियम के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 9 बज कर 15 मिनट तक चली। मुलाकात के अंत में प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने बारी-बारी से अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने प्रतिनिधिमंडल में शामिल बच्चों को दया करते हुए चॉकलेट और कलम प्रदान किए।

फिर,हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ जलसा गाह में पधार कर नमाज़ मग़रिब और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों के अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की अनुमति से आदरणीय अताउल मुजीब राशिद साहिब मुबल्लिग़ इन्चार्ज यू.के ने कुछ निकाहों की घोषणा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपने निवास में पधारे। आज कार्यक्रम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की हदीकतुल महदी (जलसा गाह) से मस्जिद फज़ल (लंदन) के लिए वापसी थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ रात 10 बज कर 15 मिन्ट पर हदीकतुल महदी से रवाना हुए और लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद रात सवा ग्यारह बजे मस्जिद फज़ल लंदन तशरीफ़ लाए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पधारे।

31 जुलाई 2017 (दिनांक सोमवार)

आज कार्यक्रम के अनुसार कबाबीर (फिलिस्तीन), गैम्बिया, हैती, फिलीपींस, क्रोएशिया, साइपरस, इंडोनेशिया, नेपाल, अमेरिका, हंगरी और साऊथ कोरिया से आने वाले मेहमानों और प्रतिनिधियों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात का कार्यक्रम था। मुलाकात सुबह 11 बजे से शुरू हुई।

कबाबीर के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

काबाबीर (फिलीस्तीन) से इस साल 57 लोग (स्त्री पुरूष) पर आधारित वफद आया था। इस वफद की मुलाकात का आयोजन महमूद हॉल में किया गया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सदस्यों का हाल पूछा और जलसा के बारे में पूछा।

एक महिला ने कहा: मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हुई हूं। हम सब जलसों में शामिल होकर बहुत ख़ुश हैं। जलसा की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। महोदया ने कहा: हमारे परिवार में केवल एक अहमदी है, बाकी दूसरे लोग डरते हैं। उन के लिए दुआ का अनुरोध है कि अल्लाह तआला उन्हें अहमदियत को स्वीकार करने की तौफीक़ प्रदान करे। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अल्लाह तआला फज़ल फरमाए।

एक महिला ने कहा कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के ख़िताबों ने हमें एक नया प्रकाश दिया है। सारे ख़िताब बहुत अच्छे थे। हमने बहुत कुछ सीखा है और हमारे ज्ञान में वृद्धि हुई है।

* एक सदस्य ने कहा कि जलसा सालाना के दौरान बारिश भी हुई है। इसका कुछ खास कारण होगा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया, बारिश तो अल्लाह तआला की बरकत और रहमत है। बारिश के बावजूद भी जलसा की सभी व्यवस्थाएं पूरी हो चुकी थीं और बारिश कहीं भी रोक नहीं बनी।

* एक सदस्य ने अरब देशों की वर्तमान स्थिति और उनकी लड़ाई और विनाश का उल्लेख किया कि लड़ाई कैसे समाप्त होगी? उस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ तआला ने फरमाया: मूल बात यह है कि जो हथियार इन लड़ाइयों में उपयोग हो रहा है वह हथियार दज्जाल की ताकते बेचती हैं। उनको केवल पैसे से उद्देश्य है इस बात से कोई उद्देश्य नहीं कि यह कहां जाता है कौन इसका प्रयोग करता है वे सिर्फ पैसे प्राप्त करना चाहते हैं। इस बारे में मुसलमानों को समझाएं कि अक्ल से काम लें। ख़ुद अपने हाथों से अपने आप को नष्ट कर रहे हैं। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दज्जाल से बचने के नसीहत फरमाई थी। अत: इस ज़माना के इमाम मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार करेंगे तो दज्जाल के फित्नों से बचेंगे ज़माना के इमाम को न मानने के कारण से ही दज्जाल की गोद में गिर रहे हैं।

*हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया (कबाबीर) को संबोधित करते हुए कहा कि कबाबीर के जलसा के कार्यक्रमों और कार्यों में युवा involve नहीं हैं। सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया का कर्तव्य है कि नौजवानों को जलसों में जोड़ें। जलसों की ड्यूटियों में उन्हें शामिल करें। अमीर साहिब कबाबीर से बात करें कि कैसे हम युवा वर्ग को जलसों में शामिल कर सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अपने युवाओं का इस तरह प्रशिक्षण कि वह नमाज़ें मस्जिद में आकर अदा करें और नियमित एम.टी.ए देखें और मेरे उपदेशों और भाषणों को सुनें।

कबीर के प्रतिनिधिमंडल की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की यह मुलाकात 11 बज कर 50 मिनट तक मुलाकात जारी रही।

मुलाकात के अंत में प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने करूणा करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों और बच्चियों को कलम प्रदान किए और छोटी उम्र के बच्चों को चॉकलेट दीं।

जाम्बिया के वफद की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय पधारे जहां कार्यक्रम के अनुसार जाम्बिया से आने वाले वहां के कृषि मंत्री माननीय अमरा ए जालो साहिब (Omar A Jallow) ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत हासिल की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने वज़ीर महोदय से पूछा कि क्या कृषि के क्षेत्र में गैंबिया आत्मनिर्भर है? इस पर उन्होंने कहा कि हम अभी आत्मनिर्भर नहीं हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: जाम्बिया अपनी आबादी और क्षेत्रफल के लिहाज़ से छोटा देश है और कृषि के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने अमीर गैमिबया को सम्बोधित होते हुए फरमाया, आप योजना बनाएं पाकिस्तान से कृषि के विशेषज्ञों को भेजा जा सकता है प्रौद्योगिकी का उपयोग करके कृषि के क्षेत्र में भी लाभ उठाया जा सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: हम जाम्बिया में आपको मॉडल विलेज बनाकर दिखाएँगे बल्कि जाम्बिया के किसी दूरस्थ क्षेत्र में यह और विलेज बन भी रहा जिसमें सौर ऊर्जा की सुविधा उपलब्ध की जा रही है। प्रत्येक घर में पानी की आपूर्ति के लिए एक पाइप का नेटवर्क होगा। और हेड वाटर टैंक, कृषि जगह, कला और तकनीकी प्रशिक्षण के लिए समुदाय का केंद्र स्थापित होगा। पक्की सड़कें और सड़कों पर प्रकाश की व्यवस्था आदि की जाएगी। अगर मस्जिद नहीं है तो मस्जिद की स्थापना भी मॉडल विलेज में होगी।

मंत्री ने कहा, मैं आपको सम्मान के साथ देखता हूं। जमाअत अहमदिया विभिन्न क्षेत्रों में गाम्बिया की सेवा कर रही है हम इसकी प्रशंसा करते हैं और आपको धन्यवाद देते हैं।

जलसा सालाना के बारे में बात करते हुए, कृषि मंत्री ने कहा कि जलसा की व्यवस्था और प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। तीस हज़ार से अधिक लोग एक ही स्थान पर बड़े आराम के साथ मौजूद थे। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं था। मैं इस से बहुत प्रभावित हुआ हूँ मैंने यहाँ से बहुत कुछ सीखा है। गैम्बिया में भी इस प्रकार होना चाहिए हमें गाम्बिया में भी यही काम करने की आवश्यकता है।

* हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: मैं इंशा अल्लाह गैम्बिया आऊँगा।

महोदय ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: हुज़ूर का उद्घाटन समारोह बहुत प्रभावकरी और ज्ञान से भरा हुआ था। इमाम जमाअत अहमदिया मानवता के वास्तविक champion हैं। महोदय जलसा की व्यवस्था से भी बहुत प्रभावित हुए और कहने लगे: इस दौर हर समय मुस्कुराते हुए चेहरे से एक दूसरे को मिलना संभव नहीं। जिस तरह से मेहमानों का ध्यान रखा जाता है, यह बहुत अच्छा है। खाने और पीने की व्यवस्था बहुत अच्छी थी और निवास तथा ट्रांसपोर्ट की सुविधा अच्छी थी। इस जलसा में भाग लेने के बाद, मेरी इच्छा है कि भविष्य में भी जलसा में बार बार शामिल होना चाहता हूं। मेरी इच्छा है कि इमाम जमाअत अहमदिया गैम्बिया पधारें और अपने मुबारक कदमों से गैंबिया को सम्मानित करें। वापस जाकर गैम्बिया के परीज़ीडीनट को रिपोर्ट पेश करूँगा और इंशा अल्लाह हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को आमंत्रित करेंगे और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ राज्य के मेहमान के रूप में गैम्बिया का दौरा करेंगे।

हुज़ूर अनवर से मुलाकात के बाद वह बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे कि हुज़ूर अनवर से मिलने के बाद एक हार्दिक आराम मिलता है। हुज़ूर का नूरानी चेहरा दिल तथा मन पर एक अजीब प्रभाव करता है। इमाम जमाअत अहमदिया सारी दुनिया के ख़लीफा होते हुए भी कितने विनम्र इंसान हैं, महसूस ही नहीं होता कि इतना प्यारा और विनम्र व्यक्ति सारी दुनिया का आक़ा तथा मौला है।

मंत्री की हुज़ूर अनवर से यह मुलाकात 12 बज कर 10 मिनट तक जारी रही। मुलाकात के अंत में महोदय ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

हैती के वफद की हुज़ूर अनवर मुलाकात

* इस के बाद 12 बज कर 15 मिनट पर हैती से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई।

* हैती से आने वाले मेहमानों में श्री जोसेफ पियरे रिचर्ड डुप्लान हैती के राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के रूप में आए थे और अन्य मेहमान श्री Mr Joseph Pierre Richard Duplan, धार्मिक थे जो धार्मिक मंत्रालय, हैती के प्रमुख थे।

* दोनों मेहमानों ने स्पष्ट रूप से इस बात को व्यक्त किया कि जलसा सालाना के सारे प्रबन्ध अविश्वसनीय थे। सभी सेवा करने वालों में, हमें विनम्रता और विनय ही नज़र आया। बहुत अनुशासन था। एक भाईचारा था। एक जगह में इतने सारे लोग थे, लेकिन उनके बीच किसी भी प्रकार का झगड़ा नहीं हुआ और न यह देखा कि लोग भोजन के लिए आगे धक्का लगा रहे हैं। बल्कि यह भी देखा कि उनमें से प्रत्येक एक दूसरे को प्राथमिकता दे रहा था। हमारी इस यात्रा ने हमारे सामने अहमदियत की असली तस्वीर रखी है। मैं जमाअत अहमदिया का बहुत आभारी हूं और स्पष्ट रूप से कहता हूं कि यह ऐसी जमाअत है जो अन्य धर्मों के साथ मिलकर काम कर सकती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आप का जलसा में आने का बहुत बहुत शुक्रिया इस पर मेहमानों ने कहा, हम भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला का भी धन्यवाद करते हैं। आपने हमें आमंत्रित किया और अच्छी तरह से प्रबंधन किया और हमें सम्मानित किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: अभी जमाअत हैती में पंजीकृत नहीं है। अभी आप लोग इस की समीक्षा कर रहे हैं। आप लोगों ने जलसा में देख लिया है कि 30 हज़ार से अधिक लोग एक दूसरे को मुस्कुरा रहे थे। आपस में प्यार का माहौल स्थापित था। कोई लड़ाई झगड़ा नहीं था। आपने एकता का एक नमूना देखा है। यही इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षा है। मुहब्बत तथा प्यार है, भाईचारा है शांति और सुरक्षा है।

*हैती के राष्ट्रपति के प्रतिनिधि Joseph Pierre Richard Duplan साहिब ने अपने भाव प्रकट करते हुए कहा: जलसा में शामिल होने से पहले मेरे दिल में कई शंकाएं थीं कि पता नहीं किस प्रकार के मुसलमान हैं और वहां जाकर मेरा क्या बनेगा? लेकिन जलसा में शामिल होने के बाद, मेरे सभी संदेह दूर हो गए हैं। हर एक सादगी और सहनशीलता का प्रदर्शन कर रहा था। हर तरफ भाईचारा की माहौल था। इमाम जमाअत अहमदिया के साथ जब मुलाकात हुई, तो पता चला कि इमाम जमाअत अहमदिया के पास केवल आध्यात्मिकता का ही नूर नहीं बल्कि दुनिया का बहुत ज्ञान है। मुलाकात के दौरान मुझे एहसास हुआ कि मेरे और उनके बीच एक विशेष संबंध था। बेशक, वह एक महान काम के लिए ख़ुदा तआला की तरफ से विशेष रूप से तैयार किए गए हैं। उनकी बातचीत जादूई और असामान्य ज्ञान से भरी हुई होती है। होंठों पर एक मुस्कान होती है, जिस से प्रत्येक मिलने वाला आप का चाहाने वाला हो जाता है। मैं एक धार्मिक व्यक्ति नहीं हूं, लेकिन इस जलसा में शामिल होने और इमाम जमाअत अहमदिया के साथ मिलने के बाद मेरा दिल कह रहा है कि अगर कोई सच्चा धर्म है तो वह इस्लाम अहमदियत है।

हैती के वफद की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात 12 बजकर 25 मिनट तक जारी रही। अन्त में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ तस्वीर बनाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इसके बाद, कार्यक्रम के अनुसार, फिलीपींस के प्रतिनिधिमंडल ने 12:30 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के साथ मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया।

फिलीपीन वफद की हुज़ूर अनवर मुलाकात

*फिलीपीन से पाँच लोगों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल जलसा सालाना यू.के में शामिल हुआ जिन में एक कांग्रेस मैन मुख्य Salvador Belaro Jr साहिब और उनकी पत्नी और एक रिपोर्टर Elena Aben साहिबा जो कि मनीला बुलेटिन की वरिष्ठ correspondent हैं, शामिल थीं।

*पत्रकार के सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तेरह साल मक्का में अत्याचार सहे लेकिन किसी अत्याचार और हमले का कोई जवाब नहीं दिया। 13 साल के उत्पीड़न के बाद, मदीना में हिदरत की। मक्का के कुफ्फार ने वहां जाकर मदीना में जाकर मुसलमानों पर हमला किया ताकि इस्लाम और इस के मानने वालों को खत्म किया जाए। तब ख़ुदा तआला ने आदेश दिया कि तुम इन हमलों का उत्तर दो और ख़ुद का बचाव करो। यदि उनके हमलों का उत्तर नहीं दिया जाता है, तो भिक्षुओं के घर ध्वस्त कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के उपासना स्थल भी और मस्जिदें हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने मुसलमानों को स्वयं का बचाव करने की इजाजत दी ताकि सभी धर्मों के पूजा स्थल सुरक्षित रहें। फिर ख़ुद को बचाने के दौरान आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों को निर्देश दिए और प्रोत्साहित किया कि महिलाओं और बच्चों को नहीं मारना, बूढ़े लोगों को नहीं मारना, किसी भी धार्मिक व्यक्ति को नहीं मारना , पेड़ नहीं काटना अमन स्थापित करना है और प्रतिशोध नहीं लेना। फरमाया: आज कल तो कोई देश चाहे छोटा हो या बड़ा इस्लाम के ख़िलाफ़ कोई आक्रमण नहीं कर रहा इसलिए अब जो युद्ध हैं वह जिहाद नहीं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि मैं दो कामों के लिए आया हूं। एक यह है कि लोग अपने सृष्टिकर्ता को पहचानें और खुदा तआला के अधिकार अदा करें, और दूसरे लोग एक दूसरे के लिए हक अदा करें ताकि दुनिया में शांति हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फरमाया: आजकल इस्लाम पर जो हमला है वह साहित्य और मीडिया के माध्यम से है। उत्तर के रूप में भी यही हथियार प्रयोग होना चाहिए । इसलिए जमाअत अहमदिया कुरआन करीम के अनुवाद और साहित्य के पर्याप्त प्रकाशन और मीडिया का उपयोग करके इस्लाम पर हमले का जवाब दे रही है।

* कांग्रेस मैन सालवादोर बेल्लारी जूनियर जो वहाँ Assistant Majority Floor Leader की स्थिति से कांग्रेस में उच्च स्थान रखती हैं ने जलसा के बारे में प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा: यह मेरे लिए एक आंखें खोल देने वाला अनुभव था जिस से मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला मेरे लिए सबसे हर्षजनक बात यह थी कि जमाअत के लोग एक दूसरे से बहुत प्यार से और अच्छी तरह से मिलते हैं और एक-दूसरे की मदद करने की कोशिश करते हैं। इस अनुभव ने इस्लाम के मेरे ज्ञान को बहुत बढ़ाया और मुझे एक सुन्दर इस्लामी शिक्षा से परिचय करवाया जिस का मुझे पहले नहीं पता था। मुझे इस जलसा में आकर ही पता चला कि इस्लाम के बारे में जो बातें माडिया में कही जाती हैं उन का इस्लाम से कोई सम्पर्क नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से मुलाकात के बाद कहने लगे कि: इमाम जमाअत अहमदिया बहुत आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं और वास्तव में एक नेता हैं। वह एक सच्चे True Statesman and Charismatic Leader हैं, जिनके पास एक बड़े संगठन का मार्गदर्शन करने की शक्ति है। आप एक इस प्रकार के नेता हैं जो अपनी जमाअत को बहुत प्यार करता है और उनके बारे में सोचता है। आपके पास दुनिया के सभी मुद्दों के बारे में व्यापक ज्ञान है, यह सबूत

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 3 Thursday 3 May 2018 Issue No. 18

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

है कि आपने मुलाकात के दौरान सभी प्रश्नों के उत्तर दिए हैं। जिहाद के बारे में संवाददाता द्वारा किए गए प्रश्न के उत्तर में आपने कोई पक्ष भी खाली नहीं रहने दिया और न ही अपनी प्रतिक्रिया में कोई अनावश्यक बात थी। मैंने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के बारे में जो सवाल पूछा था कि फिलीपींस में उग्रवाद और आतंकवाद को रोकने में अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय का क्या रोल या होना चाहिए? इसका जवाब भी बहुत tactful था। आप ने अपने जवाब में किसी देश या मुसलमान नेता का अपमान नहीं किया लेकिन इसके साथ आप ने स्पष्ट रूप से यह भी कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को जो मदद करनी चाहिए वह नहीं की जा रही।

*अख़बार मनीला बुलेटिन की वरिष्ठ रिपोर्टर ऐलेना अबीन साहिबा ने कहा कि: मुझे मुलाकात में शामिल होकर बहुत कुछ सीखने को मिला। विशेष रूप से मुलाकात में आतिथ्य और अनुशासन से बेहद प्रभावित हुई। जमाअत के लोगों की ईमानदारी, प्रेम, आतिथ्य और अनुशासन बेहद प्रभावित करने वाला है। इमाम जमाअत अहमदिया एक बेहद आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं। वह जब बोलते हैं तो दिल करता है सुनते जाएं। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि प्रत्येक उनका सम्मान और इज़्ज़त के लिए मजबूर हो जाता है। इमाम जमाअत अहमदिया ने सारे सवालों के जवाब बहुत विनम्रता से दिए। मुझे उनकी यह बात भी बहुत अच्छी लगी कि आप निराधार बातें करने की बजाय बिल्कुल सीधी और खरी बात करते हैं। इमाम जमाअत अहमदिया के व्यक्तित्व में चरम का विनम्र है लेकिन ऐसी विनम्रता जो अगले को शिष्टाचार वाला बनने पर मजबूर करती है। मुलाकात से पहले समय की कमी के कारण हमारी इच्छा थी कि जल्द से जल्द मुलाकात हो ताकि हम बाद में लंदन घूम सकें। लेकिन दौरान मुलाकात दिल चाहता था कि मुलाकात जितनी लंबी हो सके उतना ही बेहतर है।

फिलीपींस के प्रतिनिधिमंडल के साथ हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की यह मुलाकात 12 बजकर 45 मिनट तक चली। अंत में प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का श्रेय पाया। बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ महमूद हाल में तशरीफ़ लाए जहां देश क्रोएशिया और मैसेडोनिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाकात की सआदत पाई।

क्रोएशिया और मैसेडोनिया के वफ्द की हुज़ूर अनवर से मुलाकात

* क्रोएशिया से इस साल 21 लोगों पर आधारित प्रतिनिधिमंडल आया था जिसमें दो सांसद, वकील, प्रोफेसर, शिक्षक, निर्देशक अरबिक लैंग्वेज केंद्र ज़गरब, विश्वविद्यालयों के छात्र, सिविल इंजीनियर और व्यापार विभाग से संबंध रखने वाले मेहमान शामिल थे। जबकि देश मकदूनिया से दो पत्रकारों के वफद ने जलसा सालाना में भागीदारी की।

* प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपना परिचय करवाया और इस बात को स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया कि जलसा सालाना की सभी व्यवस्थाएं बहुत बढ़िया थीं और हमारा बहुत अच्छा ख्याल रखा गया। हमारी हर ज़रूरत पूरी की गई। हम सब जलसा के प्रशासन का धन्यवाद करते हैं।

* यूरोप के इकट्ठा होने के संदर्भ में एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि मैंने अपने यूरोपीय संसद के सम्बोधन में कहा था कि यूरोप इकट्ठा रहे तो उसका लाभ है। *एक सवाल के जवाब में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ ने फरमाया कि धर्म में कोई बाध्यता नहीं है। धर्म का मामला दिल का है। आप किसी को मजबूर नहीं कर सकते।

* क्रोएशिया से आने वाले प्रतिनिधिमंडल के एक मेहमान Mr Mulabegovic Sead पेशे के आधार पर वकील हैं और जलसा की कार्रवाई से बहुत प्रभावित हुए। हुज़ूर अनवर के साथ मुलाकात के दौरान अत्यधिक भावुक होकर कहने लगे न तो अंग्रेज़ी सही बोल सकता हूँ और न ही उर्दू आती है। लेकिन यह निश्चित रूप से कहना चाहता हूँ कि पिछले साल मैंने एक मुसलमान के रूप में जलसा में शिरकत की थी। जबकि इस साल में अहमदी मुसलमान बन कर अपने देश वापस जा रहा हों।

* क्रोएशियाई संसद के विधायक Mr Hajdukovic Domangoj ने आलमी बैअत के हवाले से बताया: आलमी बैअत समारोह ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। ईसाई धर्म की Faith Reconfirmation समारोह में कई बार शामिल हुआ हूं लेकिन जो भावनाएं, ईमानदारी और धर्म के प्रति वफादारी की प्रतिबद्धता जमाअत अहमदिया की वैश्विक बैअत में देखी है वह एक अजीबो-ग़रीब और अद्भुत अनुभव था जिसे मैं सारी उम्र याद रखूं जाएगा।

* क्रोएशिया से एक महिला Milicic Dolores साहिबा जो कि एक वकील हैं और मानवाधिकार की अपनी एक N G O भी है उन्होंने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा: जलसा के भाषणों और उसके बाद जमाअत अहमदिया द्वारा मानव अधिकारों के लिए किए जाने वाले कार्यों को जानकर मेरे ज्ञान में बहुत अधिक वृद्धि हुई है और उम्मीद करती हूँ कि अब मैं इस काम को अधिक बेहतर रंग में कर सकूंगी।

*क्रोएशियन प्रतिनिधिमंडल में एक महिला Katrina Celjak साहिबा भी शामिल थीं। महोदय पहले चर्च में Nun थीं और अब सच्चाई की तलाश में हैं, वह कहती हैं: जलसा के माहौल ने और यहां लगाई गई प्रदर्शनियों और जमाअत के विषय में अन्य जानकारी ने मेरे मन को बहुत प्रकाशित किया है। मुझे लगता है कि शायद जल्दी अब सच्चाई की तलाश का सफर मंज़िल को पा लेगा। इमाम जमाअत अहमदिया के भाषणों ने मेरे मन पर गहरे प्रभाव छोड़े हैं और अब मैं सभी मामलों का बहुत गहराई से समीक्षा लेनी शुरू कर दी है।

*करोशिया प्रतिनिधिमंडल में इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट के एक छात्र Marin Krstulovic साहिब भी शामिल थीं। जलसा की व्यवस्था, प्रेम और ईमानदारी से बहुत प्रभावित हुए। वह कहते हैं कि: जलसा के दौरान छोटे बच्चे जो प्रेम और ईमानदारी के साथ पानी पिलाने की ड्यूटी कर रहे थे या ख़राब मौसम में पार्किंग और यातायात को नियंत्रित किया जा रहा था और सफाई की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए जो कोशिशें की जा रही थीं उनके सभी मामलों ने उन पर बहुत गहरे छाप छोड़े हैं और कहते हैं कि वह पहली बार अहमदिया जलसा में शामिल हुए हैं, लेकिन उसकी याद सारी उम्र उनके साथ रहेगी।

* क्रोएशियाई प्रतिनिधिमंडल में एक अर्थशास्त्र की छात्रा भी शामिल थीं उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया को वर्णन करते हुए कहा कि: मैं पहली बार इस सम्मेलन में शरीक हुई हूँ। जिस तरह जमाअत अहमदिया इस्लाम की वास्तविक शिक्षा फैला रही है और धैर्य और सहनशीलता और प्रेम का पाठ पढ़ा रही है। अन्य मुसलमानों को इस तरफ खुले दिल और दिमाग़ से ध्यान देने की आवश्यकता है। अहमदियत का सन्देश सच्चा है और यह प्रेरणादायक संदेश है और मैं आशा रखती हूं कि जल्द ही अन्य मुसलमान अपनी ग़लती को स्वीकार करेंगे और अहमदियत की तरफ से वास्तविक संदेश को स्वीकार करेंगे।

*मैसेडोनिया के एक पत्रकार टोनी आई सोकी साहिब दूसरी बार जलसा में शामिल हुए। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा: बारिश के कारण मेरा मानना था कि कई समस्याएं पैदा होंगी क्योंकि पिछले साल मौसम अच्छा था लेकिन जलसा के प्रशासन ने बहुत अच्छी तरह से इस समस्या को हल किया। इसी तरह, होटल की ठहरने और परिवहन का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। मुझे एक पत्रकार के रूप में हर जगह जाने और रिकॉर्ड करने की इजाज़त थी। जलसा की इंटरनेशनल मीडिया टीम ने हमारी बहुत मदद की और कुछ ऐसी रिकॉर्डिंग हमें दें जो हम ख़ुद रिकॉर्ड न सके। मुझे मुलाकात में शामिल होकर पता चला कि अहमदी मुसलमान आतंकवाद के विषय में बहुत चिंतित हैं और वह ऐसे हमलों का कभी समर्थन नहीं करते।

*करोशिया और मैसेडोनिया के प्रतिनिधिमंडलों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाकात 1 बजकर 10 मिनट तक चली। अंत में प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्यों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने की सआदत पाई।

बाद में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय में पधारे आए जहां कार्यक्रम के अनुसार देश साइपरस से आने वाले प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात का सौभाग्य पाया।

(शेष.....................)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad